हिन्दी (014) - प्रश्न बेंक

प्र-१ (अ) निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर छ वाक्यों में लिखिए ।

१. रानी लक्ष्मीबाई की जीवन लीला किस प्रकार समाप्त हुई ?

२. जेल जीवन की सफरिंग के बारे में सुभाषबाबू का क्या कहना है ?

३. सोमाबुआ किन चीजों को बडे जतन से सन्दूक में रखने लगी ? क्यों ?

४. सम्राट अशोक ने तलवार को जमीन पर क्यों डाल दिया ?

५. लेखकने विनोबा की किन किन विशेषताओं पर प्रकाश डाला है ?

६. हीरा-मोती के पारस्परिक प्रेम का वर्णन कीजिए ।

७. बुढिया का चरित्र चित्रण कीजिए ।

८. मनुष्य की निष्ठुर मनोरंजन प्रियता के बारे में महादेवीजी क्या कहती हैं ?

९. मिशनरी निंदक की क्या विशेषताएँ हैं ?

१०. धुमक्कड धर्म की क्या क्या विशेषताएँ हैं ?

११. भारतीय महिलाओं की कौन सी सफलता साहस और प्रगति की द्योतक है ?

१२. मित्र के आलिंगन से लेखक को धृतराष्ट्र की याद क्यों आई ?

१३. भीषण हिमपात ने कैसी तबाही मचा दी थी ?

१४. अपने मैके से बैलों के भाग आने पर झूरी की पत्नी पर क्या प्रतिक्रिया हुई ?

१५. सोमा बुआ ने किस तरह बुलावे की प्रतीक्षा की ?

१६. लेखक ने विनोबा की किन-किन विशेषताओं पर प्रकाश डाला है ?

१७. फौजी मुसाफिर ने भटियारे को फौजी जीवन के बारे में क्या बताया ?

१८. 'कलंक का बोझा' पाठ में सुभाषबाबू ने अपने मन की किस कमजोरी पर खेद व्यक्त किया है ?

१९. क्रान्तिकारियों ने ग्वालियर के किले पर कैसे अधिकार किया ?

२०. अन्तिम युद्ध में रानी लक्ष्मीबाई शत्रुओं से कैसे घिर गई ?

२१. विष्णु प्रभाकर की पडदादी कौन सी कहानी सुनाती थी ?

२२. ''आपने मेरी इज्जत क्यों उतारी ?'' ऐसा लेखकने किससे कहा ? क्यों ?

२३. फौजी सरदार के दिल में परायेपन की जगह अपनापन कैसे उत्पन्न हुआ ?

२४. बच्चे के लगातार रोने का फौजी मुसाफिर पर क्या असर पडा ?

२५. कण्व ने हिरन द्वारा शकुन्तला का अंचल खींचने का क्या कारण बताया ?

२६. सोना हिरनी का पात्र निरुपण कीजिए ।

२७. मानिकचन्द का धनप्रेम किस घटना से स्पष्ट होता है ?

२८. 'रोटी' लघुकथा के शीर्षक की उचितता समझाइये । अथवा
'रोटी' लघुकथा का उद्देश्य क्या है ? अथवा
'रोटी' लघुकथा में लेखिका क्या कहना चाहती हैं ?

२९. पति के आगमन पर सोमा बुआ की क्या दशा होती है ?

३०. निंदा का उद्‌गम कैसे होता है ? अथवा
'निंदा' का उद्‌गम हीनता और कमजोरी है । स्पष्ट कीजिए ।
३१. धुमक्कड धर्म संसार का आदि और सनातन धर्म कैसे है ? अथवा
राहुल सांकृत्यायन आदि सनातन धर्म किसे मानते हैं ?
३२. धुमक्कड धर्म का उद्देश्य क्या है ?
३३. चेखव की कहानी का मर्म समझाइये ।
३४. बुढिया भिखारिन में छिपे मातृत्व के दर्शन किस तरह होते हैं ?
३५. 'रुपया तुम्हें खा गया' नाट्यांश की सार्थकता सिद्ध कीजिए ।
३६. मंगोल धुमक्कडों ने क्या करामतें की ?
३७. अमिता के व्यक्तित्व की विशेषताएँ बताइए ।
३८. रानी लक्ष्मीबाई का चरित्र चित्रण कीजिए ।
३९. सम्राट अशोक का हृदय परिवर्तन कैसे हुआ ?
४०. सराय में सोया हुआ मुसाफिर कैसा स्वप्न देखता है ?
४१. 'दो बैलों की कथा' पर से प्राणियों में रहे मानवीय भाव समझाइये ।
४२. बिना पैसे की विश्वयात्रा से यात्रियों को कैसा लाभ पहुँचा ?
४३. धुमक्कड दुनिया की सर्वश्रेष्ठ विभूति कैसे है ?
४४. 'बचपन के वे दिन' के आधार पर 'पट्टी-पूजन संस्कार' का वर्णन कीजिए ।
४५. दुनिया को हिमपात से बचाने की डॉ.चिटणीस की क्या योजना थी ?
४६. 'रोटी' लघुकथा श्रमजीवी नारी की बेबसी का चित्र प्रस्तुत करती है । समझाइये ।
४७. भूखा बालक कहाँ-कहाँ गया और उसे क्या अनुभव हुआ ?
४८. रानी लक्ष्मीबाई का एक वीरांगना के रुप में चरित्र चित्रण कीजिए ।
४९. मानिकचन्द अन्त में कौन सा सनातन सत्य समझता है ?
५०. ईर्ष्या-द्वेष से प्ररित निंदा का रुप कैसा होता है ?
५१. अपना-पराया कहानी के द्वारा लेखक क्या कहना चाहते हैं ?
५२. सोना अनाथ कैसे हुई थी ?
५३. भूखे बालक को जगत्माता के दर्शन कहाँ और कैसे हुए ?
५४. लेखक परसाईजीने निंदको के कितने प्रकार बताए हैं ?
५५. यदि ईश्वर ने वाणी दी होती तो हीरा और मोती झुरी से क्या शिकायत करते ? क्यों ?
५६. फौजी सरदार का हृदय कैसे बदल गया ?
५७. धुमक्कड बनने के लिए लेखक आनेवाली पीढी को कैसे प्रोत्साहित करते हैं ?
५८. विनोबाजी ने कैसी गदा और कैसा चक्र विश्वयात्रियों को दिया ?
५९. भूखे बालक के पेट का दावानल किससे बुझा ? कैसे ?
६०. बंगाल के जल एवं मिट्टी के बारे में लेखक क्या कहते हैं ?
६१. फौजी वापस आकर अब कैसी जिन्दगी जीना चाहता था ? क्यों ?

६२. धुमक्कड धर्म से विमुख रहने के कारण किन देशों को कौन सा नुकसान हुआ ?

६३. किशोरीलाल मानिकचंद से अधिक सुखी कैसे मानता है ?

६४. डॉ. वसंत चिटणीस की चेतावनी लोगों को खोखली क्यों प्रतीत हुई ?

६५. अशोक ने अमिता को कौन सा वचन दिया ?

६६. चाचा विश्वम्भर सहाय किसे गोद लेते हैं ? उस घटना का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए ।

(ब) निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में लिखिए ।

१. सूरदासने 'निंदा शबद रसाल' क्यां कहा है ?

२. 'कलंक का बोझा' में लेखक सुभाषबाबू की क्या प्रार्थना है ?

३. लेखिका महादेवीजी को सोना से कौन सा सत्य अनायास प्राप्त हुआ ?

४. धुमक्कड धर्म कैसा धर्म है ?

५. विष्णु प्रभाकर की माँ का नित्यक्रम क्या था ?

६. काँच बीननेवाली औरत प्रतिदिन ईश्वर से क्या प्रार्थना करती है ?

७. धुमक्कड होना आदमी के लिए परम सौभाग्य की बात कैसे है ?

८. कहानी का राजकुमार क्या-क्या लेकर पाठशाला पढने जाता है ?

९. सोना छोटे बच्चों का मनोरंजन किस प्रकार करती थी ?

१०. विष्णु प्रभाकर पाठशाला की फीस के बारे में क्या कहते हैं ?

११. फौजी किस प्रकार के जीवन की आकांक्षा रखता है ?

१२. अंग्रेज इतिहासकार मैलिसन ने रानी लक्ष्मीबाई की प्रशंसा किन शब्दों में की है ?

१३. बुढिया ने ईश्वर के अस्तित्व के बारे में पूछे गए प्रश्न का क्या उत्तर दिया ?

१४. डॉ. वसंत चिटणीस का सिद्धांत न माननेवाले वैज्ञानिकों की क्या धारणा थी ?

१५. रानी लक्ष्मीबाई पराजय में भी विजयिनी किस प्रकार थी ?

१६. रानी शत्रुओं से क्यों घिर गई ?

१७. लेफ्टिनंट बोकर रानी लक्ष्मीबाई को गिरफ्तार क्यों न कर सका ?

१८. फौजी की आँखों में आँसू कब आ गए ?

१९. सोना की कथा को लेखिका कैसी कथा मानती हैं ?

२०. सोना लेखिका के प्रति स्नेह कैसे प्रकट करती थी ?

२१. मनुष्य की कौन-सी प्रवृत्ति महादेवीजी की समझ में नहीं आती ?

२२. किशोरीलाल ने मानिकचन्द के पाप का क्या प्रायश्चित किया था ?

२३. जयलाल को पढाने के लिए घरवालों ने क्या-क्या मुसीबतें सही थी ?

२४. मानिकचन्द का सेफ की चाबी के बारे में क्या विचार है ?

२५. सुभाषबाबू जेलखाने को अपने लिए आशीर्वाद क्यों मानते हैं ?

२६. क्या सोचकर डॉ. चिटणीस को पसीना छूट रहा था ?

२७. दो नवंबर को बंबईवालों ने कौन-सा अभूतपूर्व दृश्य देखा ?

२८. विनोबा 'गदा' और 'चक्र' का अर्थ क्या बताते हैं ?

२९. सोमाबुआ को पति से क्या शिकायत थी ?

३०. अमिता की उदारता का अशोक पर क्या प्रभाव पडा ?

३१. निंदा का अंधेरा कैसा होता है ?

३२. देवताओं को कर्मी मनुष्यों से ईर्ष्या क्यों होती है ?

३३. धुमक्कड होना आदमी के लिए परम सौभाग्य की बात कैसे है ?

३४. आदिम मनुष्य की क्या विशेषता थी ?

३५. कूपमंडकता से देश को क्या हानि हुई ?

३६. भटियारा क्यों सहम गया ?

३७. सोमा बुआ को रोती देखकर राधाने क्या कहा ?

३८. मोती ने दढियल आदमी को गाँव से कैसे भगाया ?

३९. लेखक जेलखाने के बारे में क्या कहते हैं ?

४०. मिशनरी निंदक के क्या लक्षण हैं ?

४१. विनोबाजी ने यात्रियों को गरम पानी पीने की सलाह क्यों दी ?

४२. अंग्रेज सेनापति रानी का अन्त करना क्यों जरुरी मानते थे ?

४३. पति के आने पर सोमा बुआ की स्थिति कैसी होती है ?

४४. सत्तर वर्ष बाद भी विष्णु प्रभाकर को किस की गूंज याद है ?

४५. मंगोल धुमक्कडों ने क्या करामतें की ?

४६. मानिकचन्द की सेफ की चाबी के बारे में क्या विचार है ?

४७. अनाथ बालक को दूसरा बाडा कैसा लगा ?

४८. हिमपात के समय डॉ. राजीव शाह और डॉ. वसंत चिटणीस कहाँ थे ?

४९. गया के घर जाकर हीरा और मोती ने नाँद में मुंह क्यों नहीं डाला ?

५०. रानी लक्ष्मीबाई शत्रुओं से क्यों घिर गई ?

५१. क्लोरा केवल सोना पर ही क्यों विश्वास करती थी ?

५२. विष्णु प्रभाकर जमाने में दशमलव प्रणाली न होने से क्या क्या पढाया जाता था ?

५३. औरत की आजीविका कैसे चलती थी ?

५४. 'रोटी' लघुकथा में औरत प्रतिदिन ईश्वर से क्या प्रार्थना करती थी ?

५५. राजीव शाह चेन्नई जाकर क्यों बसे थे ?

५६. सम्राट अशोक किसका बन्दी बन गया ? कैसे ?

५७. लडकी को बैलों से आत्मीयता क्यों हो गई थी ?

५८. अंग्रेज सेनापति दाँतों तले अँगुली क्यों दबाते थे ?

५९. फौजी का मन फौज से क्यों उब गया ?

६०. रूपया मानिकचंद को किस तरह खा गया ?

६१. भारतीय नारी युग-युगान्तरों से किनसे संदेश लेती रही है ?

६२. फौजी हौस में हीरा और मोती की क्या हालत हुई ?

६३. विष्णु प्रभाकर किस पर तीनों लोक निछावर करते थे ?

६४. निंदा की क्या महिमा है ?

६५. अमिताने अशोक को क्या चेतावनी दी ?

६६. पेशवा की नींद कब टूटी ?

६७. सोमा बुआ अकेली क्यों रहती थी ?

६८. अनाथ बालक को दूसरा बाडा कैसा लग रहा था ?

६९. विश्वयात्री किस रास्ते से अमेरिका पहुँचनेवाले थे ? क्यों ?

७०. सोना हिरनी की मृत्यु कैसे हुई ?

७१. सामाजिक जीवन और फौजी जीवन में क्या अन्तर है ?

७२. बुढिया की सूखी रोटी खाकर बालक ने क्या अनुभव किया ?

७३. सुभाषबाबू किसे अपने लिए सबसे बडा पुरस्कार मानते हैं ?

७४. विनोबाजी विश्वयात्रियों की रक्षा के लिए क्या देते हैं ?

७५. जेल में बिताये दिनों के संदर्भ में सुभाषबाबू क्या लिखते हैं ?

(क) निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए ।

१. धुमक्कडी की दीक्षा कौन ले सकता है ?

२. सोना हिरनी को कौन से खाद्य पदार्थ पसंद थे ?

३. कौन सा विश्वास जेल में लोगों को पागल होने से रोकता है ?

४. फौज में किसे इनाम और प्रतिष्ठा मिलती है ?

५. रानी लक्ष्मीबाई का लक्ष्य क्या था ?

६. झूरी की पत्नीने हीरा और मोती को 'नमकहराम' क्यों कहा ?

७. झूरी काछी के बैलों के क्या नाम थे ?

८. अंग्रेज सेनापति रानी के किस रुप से काँप उठते थे ?

९. अन्तिम युद्ध प्रयाण में रानी के चार भक्त अनुयायी कौन थे ?

१०. बालक बुढिया से क्या जानना चाहता था ?

११. अनाथ बालक ने बुढिया को पेड के तले क्या करते देखा ?

१२. बालक विष्णु प्रभाकर को किसकी पाठशाला में दाखिल किया गया ?

१३. सबसे बढकर मुहताज कौन है ?

१४. बचपन में विष्णु प्रभाकर को कहानी कौन सुनाता था ?

१५. फौजियों में मरने की भावना कहाँ से पैदा होती है ?

१६. फौजियों में किस बात की होड होती है ?

१७. लेखिका महादेवी वर्मा ने गर्मियों में कहाँ जाने का कार्यक्रम बनाया था ?

१८. सोना किन-किन नामों से पुकारी जाती थी ?

१९. व्यक्ति के अन्दर का मानव कब मर जाता है ?

२०. किशोरीलाल की सुख-शान्ति किसने छीन ली थी ?

२१. मानिकचन्द दुनिया का एकमात्र सत्य किसे मानता है ?

२२. सुभाषबाबू को जेल और उसके बाहर की दुनिया कैसी लगती है ?

२३. सुभाषबाबू के अनुसार कष्टों में भी प्रकृतिस्थ कौन रह सकता है ?

२४. विनोबा कितनी भाषाएँ जानते थे ?

२५. डॉ. राजीव शाह ने कौन सा लेख लिखा था ?

२६. रिचर्ड होम्स कौन थे ?

२७. जख्मी औरत डॉक्टर से क्या न कह सकी ?

२८. बुआ का दिल क्यों बुझ गया था ?

२९. सोमा बुआ का स्वभाव कैसा था ?

३०. अमिता कौन थी ?

३१. अशोक ने क्या प्रतिज्ञा की थी ?

४०. मगध का विजयी सम्राट किससे हार गया ?

४१. अशोक ने अमिता से क्या माँगा ?

४२. ईर्ष्या प्रेरित निंदक की क्या दशा होती है ?

४३. संतों ने निंदकों के लिए कौन-सी सलाह दी है ?

४४. निंदकों की एकाग्रता भक्तों में भी दुर्लभ क्यों है ?

४५. पश्चिम में विज्ञान-युग का आरम्भ किन चीजों ने कराया ?

४६. धुमक्कड धर्म से विमुख हो जाने से भारत और चीन किससे वंचित रह गए ?

४७. अमिता ने अशोक की किन चीजों की तारीफ की ?

४८. महादेवी वर्मा ने क्या निश्चय किया था ?

४९. सोमा बुआ लोगों के किन कामों में हाथ बँटाने चली जाती थी ?

५०. मदन को चाभी न देने पर रानी ने मानिकचन्द को क्या कहा ?

५१. चौर्य विद्या का पाठ पाठशाला में ही मिल गया था, कैसे ?

५२. हिमपात का मुकाबला कौन-कौन से देश नहीं कर सके ?

५३. पहाडे आसानी से याद करने के लिए लेखक किस तरकीब से काम लेते थे ?

५४. क्लोरा किन्हें अपने बच्चों के पास आने नहीं देती थी ?

५५. अमिता ने अशोक को कौन सा आदेश दिया ?

५६. निंदक मित्र की तुलना लेखक ने किससे की है ?

५७. 'धुमक्कड धर्म' पाठ में लेखक किसे दम्भी मानते हैं ?

५८. देशबन्धु ने बंगला गीत में क्या कहा है ?

प्र-२. (अ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए ।

१. स्वयंवर में आए हुए राजा उपहास के पात्र कैसे बने ?

२. अकाल और उसके बाद की परिस्थिति का चित्रण कीजिए ।

३. सतपुडा के घने जंगल किस प्रकार सो रहे हैं ?

४. प्रेम के धागे को न तोडने के लिए रहीम क्यों कहते हैं ?

५. आझादी मिलने पर देश को क्या-क्या उपलब्ध हुआ है ?

६. पंद्रह अगस्त कविता में कवि ने देशवासियों को क्या संदेश दिया है ?

७. तितली और फूल में क्या समानता है ?

८. आदमी की पीर के बारे में कवि दुष्यंतकुमार क्या कहते हैं ?

९. कविने नंदरानी की खुशी का वर्णन किस प्रकार किया है ?

१०. राजा जनकने व्याकुल होकर क्या कहा ?

११. लक्ष्मण के मतानुसार गौरव किन्हें मिलता है ?

१२. 'ग्राम श्री' कविता में पंतजी को खेतों में लगी हरी सब्जियाँ कैसी प्रतित होती हैं ?

१३. 'पंचवटी' काव्य में कवि ने लक्ष्मण का वर्णन किस प्रकार किया है ?

१४. रहीम याचकता को बुरा क्यों मानते हैं ?

१५. मीराबाई को हरि के आगमन की सूचना कैसे मिलती है ?

१६. 'अकाल और उसके बाद' काव्य में कवि ने क्या संदेश दिया है ?

१७. जसोदा मैया कन्हैया को चलना कैसे सिखाती हैं ?

१८. कवि दुष्यंतकुमार की गजल 'इस नदी की धार में' का आशय स्पष्ट कीजिए ।

१९. लक्ष्मण के क्रोधपूर्ण वचनों का राजा जनक की सभा पर क्या असर हुआ ?

२०. रहीम कटु वचन बोलनेवालों को कैसी सजा देने की सलाह देते हैं ?

२१. कविने पंचवटी के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन किस प्रकार किया है ?

२२. कविने आजादी मिलने को 'नए स्वर्ग का प्रथम चरण' क्यों कहा है ?

२३. जीवन के कष्टों के बारे में लक्ष्मण के क्या विचार हैं ?

२४. शिव-धनुष उठाने में राजाओं के असफल होने पर जनक ने अपनी निराशा कैसे प्रकट की ?

२५. इस नदी की धार में कवि हमें क्या संदेश देते हैं ?

२६. सतपुडा के जंगलों में घुसने पर क्या-क्या कष्ट सहने पडते हैं ?

२७. कवि श्री पंतजी को वसुधा रोमांचित क्यों लगती है ?

२८. आदमी की पीर की पुलना कविने किस-किससे की है ?

२९. पंतजीने वृक्षों पर आए परिवर्तन का वर्णन किस तरह किया है ?

३०. ''सुनी मैं हरि आवन की आवाज'' पद के आधार पर वर्षा का वर्णन अपने शब्दों में लिखिए ।

३१. धीर-धनुर्धर लक्ष्मण अपने आप से क्या बातें करते हैं ?

(ब) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में लिखिए ।

१. मीराबाई को हरि आगमन की सूचना कैसे मिलती है ?

२. अकाल के कारण घर की क्या दशा हुई ?

३. मछलियाँ दीन क्यों हैं ?

४. धरतीने नया रूप क्यों धारण किया ?

५. कवि किसे मरा हुआ मानते हैं ?

६. बालकृष्ण रूठ क्यों जाते हैं ?

७. 'जनगंगा में ज्वार' के द्वारा कवि क्या कहना चाहते हैं ?

८. खेतों में चाँदी की सी जाली कैसे बनती है ?

९. पुराने सिंहासन की प्रतिमाएँ टूट रही हैं, कवि ऐसा क्यों कहते हैं ?

१०. खेत में लगी हरी सब्जियाँ कैसी प्रतित होती हैं ?

११. जर्जर नाव का क्या महत्व है ?

१२. धरती वीर विहीन हो गई है, ऐसा राजा जनकने क्यों कहा ?

१३. स्वच्छ शिला पर बैठा लक्ष्मण कैसा दिखाई दे रहा है ?

१४. 'आकाश सी छाती' का क्या अर्थ है ?

१५. 'हमारा घर कमजोर है' ऐसा कवि माथुरजीने क्यों कहा ?

१६. प्रेम के धागे की क्या विशेषता है ?

१७. होली आने पर गोंड लोग क्या करते हैं ?

१८. अकाल के कारण छिपकलियों और चूहों की क्या हालत होती है ?

१९. मछलियों के दृष्टांत द्वारा कवि क्या कहना चाहते हैं ?

२०. गुरु विश्वामित्रने राम को क्या आदेश दिया ?

२१. कवि के अनुसार बुझा हुआ दीपक भी रोशनी कैसे दे सकता है ?

२२. जशोदा बालकृष्ण के प्रति अपना प्रेम कैसे प्रकट करती हैं ?

२३. आर्य राजाओं के जीवन का क्या लक्ष्य होता था ? इसके लिए वे क्या करते थे ?

२४. सतपुडा के जंगल की लताएँ कैसी हैं ?

२५. कवि एक चिनगारी ढूँढ लाने के लिए क्यों कहता है ?

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए ।

१. धरती अपना आनन्द कैसे प्रकट करती है ?

२. लक्ष्मण को पंचवटी में किनका सत्संग मिलता है ?

३. पहली रत्न हिलोर कहाँ से आई ?

४. गेहूँ के दाने कैसे लगते हैं ?

५. राजा जनक अपना प्रण क्यों नहीं छोड सकते थे ?

६. आदमी की पीर कैसे प्रकट होती है ?

७. 'आकाश सी छाती' से क्या तात्पर्य है ?

८. युग की पतवार कौन उठा सकता है ?

९. पुराने सिंहासन की प्रतिमाएँ टूट रही हैं, कवि ऐसा क्यों कहते हैं ?

१०. कुहरे से ढके खेत, बाग, गृह, वन कैसे लगते हैं ?

११. लक्ष्मण ने क्या शपथ ली ?

१२. नदी किससे बतियाती है ?

१३. प्रेम के धागे को न तोडने के लिए कवि क्यों कहते हैं ?

१४. अकाल में चूल्हा-चक्की की क्या स्थिति होती है ?

१५. गोंड लोगों के ढोल कब गूँज उठते हैं ?

१६. रहीमजी मछलियों को दीन क्यों कहते हैं ?

१७. रहीमजी के मत से बडों को भी छोटा कब बनना पडता है ?

१८. मीरा हरि की राह कहाँ देख रही है ?

१९. कवि एक चिनगारी ढूंढ लाने के लिए क्यों कहता है ?

२०. मानव मन की क्या विशेषता है ?

२१. स्वतंत्र होने पर भी हमारा समाज और घर कैसा है ?

२२. कोई पास न रहने पर भी मनुष्य का मन क्या करता है ?

२३. लक्ष्मण अकेले में किससे बातें कर रहे हैं ?

२४. अंधेरे की सडक कहाँ तक जाती है ?

२५. ओसकण कहाँ चमक रहे हैं ?

२६. कैसे लोग मरे हुए के समान हैं ?

२७. निर्वचन नदी क्या करती है ?

२८. दामिनी (बिजली) ने लाज क्यों छोड दी है ?

२९. देश के खुले द्वार पर पहरुए को किस प्रकार रहना है ?

३०. श्रीदामाने जाति-पाँति के बारे में कन्हैया से क्या कहा ?

(ड) काव्य पंक्तियां पूर्ण कीजिए ।

१. सुनी मैं हरि आवन की आवाज .....
..... बेग मिलो महाराज ।

२. दाने आए घर के अंदर .....
..... पाँखें कई दिनों के बाद ।

३. कई दिनों तक चूल्हा रोया .....
..... हालत रही शिकस्त ।

४. इस नदी की धार में .....
..... गूँगी ही सही, गाती तो है ।
५. एक चादर साँझ ने .....
..... आकाश सी छाती तो है ।

प्र-३. (अ) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ देकर उसे वाक्य में प्रयोग करें ।

१. पाँव तले रौंदना
२. ताकीद करना
३. बाल सफेद होना
४. टाँग अडाना
५. माथे पर बल पडना
६. मुँह में पानी आना
७. हृदय मुँह को आ जाना
८. आँखें चमक उठना
९. छाती फाड-फाड कर काम करना
१०. पगडी उछालना
११. गले लगाना
१२. काली तस्वीर खींचना
१३. सकते में पडना
१४. चार चाँद लगाना
१५. बोटी-बोटी काँपना
१६. दाँतों तले अँगुली दबाना
१७. दामन फैलाना
१८. मुहताज होना
१९. कामयाब होना
२०. मनोमालिन्य होना
२१. ताज्जुब होना
२२. तहलका मचना
२३. कशमकश करना
२४. हाथ जोडना
२५. उल्टे पाँव लौटना
२६. चुप्पी साधना
२७. दाँतों पसीना आना
२८. दिल भारी होना

२९. मजा चखाना
३०. फूल की छडी से न छूना
३१. दिल में ऐंठकर रह जाना
३२. खबर लेना
३३. माथा चूमना
३४. ठंडा हो जाना
३५. कुहराम मचा देना
३६. बाजार गरम होना
३७. बहरे कानों पर पडना
३८. कमान संभालना
३९. पलडा बराबर रहना
४०. भगदड मचना
४१. रंग बिगडना
४२. सिर धड से अलग करना
४३. टस से मस न होना
४४. कलेजा थामना
४५. आँखों में आँसू उमडना
४६. त्रिलोकी निछावर करना
४७. मंजिल तय करना
४८. आँख खुलना
४९. तलवार के घाट उतारना
५०. जीन कसना
५१. तशरीफ ले जाना
५२. पौ फटना
५३. हाथों में माथा थामना
५४. मुँह से जवाब नहीं फूटना
५५. रूपया खाना
५६. हृदय पर हाथ रखकर कहना
५७. पाँव पसारना
५८. पसीना छूटना
५९. खून का फव्वारा छूटना
६०. राह में आँखें बिछाना
६१. कहा सुनी होना

६२. हँसते-हँसते पेट फूल जाना

६३. मद्द उडना

६४. फूट-फूटकर रोना

६५. दिल से ठंडी साँस निकलना

६६. दिल धडकना

६७. कानों पर विश्वास न होना

६८. ह्रदय छलछला जाना

६९. नागफनी को चिपटाना

७०. चैन से सोना

७१. मन में मैल न रहना

७२. झंडा गाडना

७३. चारों फलों का भागी होना

७४. नरक में भी ठीकाना न होना

७५. धक्का खाना

७६. चार लात लगाना

७७. रौंद कर रख देना

७८. जौहर दिखाना

७९. चिद्दी-चिद्दी उडाना

८०. हाथ धोना

८१. तेवर बदलना

(ब) निम्नलिखित कहावतों का अर्थ देकर स्पष्ट कीजिए ।

१. महिमा घटी समुद्र की रावण बसा पडोस ।

२. सौ सुनार की एक लुहार की ।

३. निन्दा सबद (शब्द) रसाल ।

४. नाच न जाने आँगन टेढा ।

५. क्या सब सौदा नगद कै, इस हाथ दे उस हाथ ले ।

६. जिसकी लाठी उसकी भैंस ।

७. जब पलडा पकडा है तो अन्त समय में भी साथ रखो ।

८. आदमी की पीर गूँगी ही सही, गुनगुनाती तो है ।

९. न रहे बाँस, न बाजे बाँसुरी ।

१०. साँप भी मरे और लाठी भी न टूटे ।

११. दूधार गाय की लात भली ।

१२. खीरा सिर ते काटिये, मलियत नमक मिलाय ।

१३. चार दिन की चाँदनी, फिर अंधेरी रात ।

१४. न भूतो न भविष्यति ।

१५. टूटे से फिर न मिलै, मिलै गाँठ पड जाय ।

१६. रहिमन याचकता गहे, बडे छोट हुवै जात ।

१७. अपनी गली में कुत्ता भी शेर ।

१८. सेफ की चाबी जिन्गी की चाबी है ।

१९. निन्दक नियरे राखिए आँगन कुटी छवाय ।

२०. नाव जर्जर ही सही, लहरों से टकराती तो है ।

२१. जहाँ चाह, वहाँ राह ।

३०. आँख के अँधे, नाम नयनसुख ।

(क) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं दो की भाववाचक संज्ञा बनाइए ।

मीठा, चलना, लाल, बेचना, शिशु, चंचल, सुन्दर, राजा, सीधा, अपना, बुरा, अच्छा, गरीब, आदमी, चिल्लाना, आजाद, थकना, झल्लाना, रूकना, निर्भय, कुशल, स्तब्ध, रवाना, नेता, भुखा, व्यक्ति, लघु, गंदा, स्वामी, व्यस्त, झिझकना, कोमल, हरा, हँसना, मुस्तैद, पागल, गिडगिडाना, उचित, काटना, शैतान, लडका, सजाना, छटपटाना, शान्ति, चुराना, कमजोर, थपथपाना, भटकना, मनाना, खरीदना, सीना, छूटना, मुस्काना, बहुत, विनम्र, धुंधला, मुस्कान, धुमक्कड, जर्जर, संक्रमित, उलझना, उडना, बुलाना, सच्चा, बूढा, मर्द, सन्तुष्ट, प्रधान, खूबसूरत, हल्का, दीन, दौड, बडबडाना, कमाना, इन्सान, खुजलाना, कडवा, गूँगा, मुद्रित, फिसलना, फैलना, खोजना, जवान, जिन्दा, ताजा, तबाह, तटस्थ

(ड) निम्नलिखित शब्दों की विशेषणवाचक संज्ञा बनाइए ।

नोक, परिवर्तन, उन्नति, तत्वज्ञान, रोमांच, तेल, रंग, बात, विश्वास, ईश्वर, जाति, गाँव, घर, समय, इतिहास, व्यथा, मजा, धर्म, झगडा, जान, सप्ताह, दिन, दाढी, श्रद्धा, स्वार्थ, पुरस्कार, प्रार्थना, प्रकृति, अर्थ, दर्द, स्वाद, किताब, समूह, गर्व, नियम, स्वर्ण, शरीर, उद्वेलन, मनोरंजन, करुणा, रक्त, दिन, पूजा, सीमा, भूलना, सम्मान, पानी, अन्त, पेट, कल्पना, प्रतीक्षा, दर्शन, कृपा, भरोसा, ज्ञान, इज्जत, क्षण, स्वर्ग, तूफान, समाज, साल, फौज, जिद, मर्द, व्यवहार, दाग, उपेक्षा, घृणा, डर, पिशाच, अपेक्षा, पत्थर, भारत, भूमि, कमाना, नमक, नरक, खेद

(इ) निम्नलिखित शब्दों की कर्तृवाचक संज्ञा बनाइए ।

खेल, धनुष, धनु, भोग, व्याख्यान, विद्रोह, राह, तमाशा, घूमना, लाठी, भूलना, शासन, क्रान्ति, आक्रमण, संचालन, प्रेरणा, सेना, पूजा, प्रबन्ध, कर्मकाण्ड, कृषि, दुकान, चिकित्सा, कहानी, आविष्कार, मशाल, फौज, साहित्य, चौकी, परीक्षा, धोखा, कर्ज,

प्रश्न, अपराध, जेल, साधना, स्पर्धा, आन्दोलन, प्रचार, आलोचना, उपासना, राजनीति, विज्ञान, प्रतियोगिता, प्रतिकार, पथ, लूटना, रिश्ता, शिक्षा, निन्दा, अभिनय, तस्वीर, लकडी, मर्म, गाना, आतंक, साँप, बात

(ई) निम्नलिखित शब्दों के विरूद्धार्थी शब्द लिखिए ।

पालतू, निन्दा, कच्चा, अन्दर, मित्र, यजमान, कंजूस, युद्ध, आगे, वरदान, प्रत्यक्ष, विराट, चंचल, स्वच्छ, अवनि, मन्द, सुन्दर, सम्मुख, धीर, वीर, योगी, जीवन, सत्संग, सुमन, अच्छा, धूप, विश्वास, अपना, समर्थन, खण्डन, नमकहराम, ज्यादा, सम्मान, सज्जन, दुर्बल, विजयी, शूर, परिचित, औरत, उदय, अस्त, दुर्भाग्य, विधवा, सशस्त्र, आक्रमण, पराधीनता, घटिया, प्रभात, सफलता, अभेद्य, पुरस्कार, खेद, मजबूत, जय, जीवित, शास्वत, गिरफ्तार, इनकार, स्वतंत्रता, कोमल, अनाथ, वाद, खत्म, शत्रु, इज्जत, प्राकृतिक, शुभ, आगे, आशीर्वाद, जीत, शेष, विषम, पुराना, कमजोर, तारीफ, चैन, आशा, संकीर्ण, सजीव, निष्क्रीय, खाद्य, सुप्त, निरर्थक, सुलभ, घृणा, क्षमा, भूखा, क्रुद्ध, मालिक, मुर्ख, उचित, आवश्यक, शान्त, स्मृति, प्यार, शत्रु, पाप, कृतज्ञता, सुयोग, हर्ष, आदर, यश, स्वीकार, जिन्दा, चिरंजीवी, महँगा, खूबसूरत, पावन, संन्यासी, कमजोरी, निन्दक, बैर, शिकस्त, दोस्त, आयात, आय, प्रवृत्ति, आगमन

(उ) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए ।

सूर्य, व्यय, आकाश, मजहब, कौवा, समय, प्रारब्ध, प्रतीक्षा, गृह, शरीर, तरूण, जहर, चारु, चन्द्र, अवनि, तरु, भुवन, कुसुमायुध, दृष्टि, मार्ग, चेष्टा, मनेहर, वक्त, माँ, विश्वास, निर्दय, प्रेम, घृणा, स्मृति, अनुमान, आक्षेप, दुर्बल, काँजीहॉस, स्वाधीनता, नाविक, नाव, खडग, कोष, विद्रोही, रिश्ता, पुरस्कार, दायित्व, संहार, विजय, आक्रान्ता, रुधिर, भू.भूमि, फूल, मंजरी, वृंत, मुस्तैद, मुहताज, प्रतीक्षा, असम्भव, भूचाल, इज्जत, संतान, आविष्कार, सावधान, स्वर्ग, इन्तजाम, अम्बुधि, सिंहासन, इन्दु, परवरदिगार, प्रामाणिकता, तनहाई, नेकी, यौवन, पवित्र, अपयश, घोडा, कुत्ता, अवकाश, सराय, तारीफ, स्वाद, फर्ज, मेहरबानी, मर्द, पत्नी, बदनसीब, हिरन, निष्ठुरता, निर्जीव, छात्रा, सोना, आलोक, अदावत, गर्दन, विहग, पंख, यात्रा, दामिनी, दादुर, इन्द्र, कर्ज, अभिशाप, प्रमाण, आकांक्षा, कमल, मृगराज, विरंचि, राजा, गिरा, लोचन, पथ, निर्झर, हिम, चिन्ता, हानि, सदमा, नजर, प्रासाद, विस्मय, गज, हठ, रात्रि

(ऊ) निम्नलिखित शब्दों के लिंग बताइए ।

फूल, कुसुम, बालक, पत्थर, घर, शेर, स्कूल, टिकट, सफर, लालच, असर, किसान, मजदूर, टमाटर, राजा, लडका, सखा, बाजा, बेटा, मंत्री, चौधरी, संतरी, बढई, धोबी, माली, पानी, जल, सिर, बाल, माथा, कान, मुँह, गाल, चेहरा, हाथ, गला, पेट, घुटना,

पैर, हृदय, गेहूँ, चावल, चना, बाजरा, उडद, मटर, मक्का, सोना, लोहा, ताँबा, काँसा, जस्ता, पहाड, वृक्ष, मकान, स्क्रू, दूध, तेल, पानी, दहीं, घी, हीरा, माणिक, मोती, अलंकार, जवाहर, पिछलग्गूपन, बहाव, चढाव, उठाव, विस्तार, प्रहार, खानदान, पान, पुजापा, बुढापा, भजन, दर्जन, सौंदर्य, माधुर्य, सत्य, मृत्य, नृत्य, पवन, तेलहन, दलहन, गर्जन, चन्दन, वजन, डॉक्टर, मजा, मिनट, कालेज, क्षण, अस्पताल, फर्ज, थप्पड, इम्तहान, फैशन, जाल, पति, बुआ, जनक, वर, बादशाह, कवि, मर्द, विधुर, सम्राट, विज्ञान, ससुर, पवन, योगी, रवि, प्राण, स्टेशन, स्वर, जेवर, कर्ज, कलंक, व्यक्ति, आशीर्वाद, मौसम, पक्षी, पानी, हिमपात, पहाड, पर्वत, आराम, बटन, दृश्य, डर, संदूक, बाजार, आँगन, खड्ग, नमक, पडोस, उपग्रह, रक्त, लालच, कुहराम, मौत, पाषण, आवाज, आदत, रात, रात्रि, शाम, पुस्तक, औरत, समझ, किरण, माला, दवा, दुआ, सेवा, रेखा, मेवा, काली, नदी, पृथ्वी, गली, रानी, दूती, चूती, आँख, नाक, छाती, टाँग, एडी, अँगुली, ज्वार, अरहर, मूँग, मसुर, चाँदी, अँगूठी, मणि, नथ, इज्जत, छत, नफरत, दौलत, किस्मत, मुद्दत, आत्मा, मृत्यु, महिमा, विजय, बर्फ, संतान, पुलिस, जंग, किस्मत, आवाज, किरण, घास, माता, बहन, गाय, रानी, बछिया, स्त्री, पत्नी, फूफी, जननी, कन्या, वधू, बेगम, कवयित्री, औरत, विधवा, साम्राज्ञी, विदुषी, सास, अवनि, दृष्टि, बात, उन्नति, नाक, मार,पीठ, तलवार, गंध, लाश, भूख, चोंच, आयु, गोद, रात, मंजिल, हवा, लहर, फिक्र, मदद, फौज, नींद, तबीयत, स्मृति, मृत्यु, बन्दूक, जेल, चोरी, चाबी, नर्स, आहट, दुनिया, सृष्टि, दाढी, सडक, समाधि, मुसीबत, चेतावनी, ऋतु, पहचान, सलाह, जीत, रोटी, बोतल, माँग, प्रजा, पूँछ, तस्वीर, विभूति, मिर्च, सैर, कमर, नाव, चादर, देह, तितली

(ए) निम्नलिखित शब्दों के लिंग परिवर्तन कीजिए ।

बैल, मालिक, आदमी, बालिका, कोकिला, बूढा, छात्र, दादा, माता, भाई, पति, इन्द्र, धरती, महाराज, हिरन, हाथी, रक्षक, रस्सी, काछी, साला, स्त्री, भगवती, साथिन, विद्रोही, संचालिका, कवि, क्रान्तिकारी, नेता, लेखक, भक्त, सखा, पंडित, गुरू, विधवा, भटियारा, सरदार, पडोसी, मोर, स्वामी, महोदय, डॉक्टर, बबुआइन, सेवक, पौत्र, मकडा, बाध, शेर, मुर्गा, शिष्य, तरूण, बेगम, नाना, दादा, निवासी, पाप, सर्प, ब्रह्मचारी, मुंशी, तेल, लुहार, ऊँट, सिंह, मास्टर, मजदूर, शिक्षक, लेखक, दर्शक, सम्पादक, परित्यक्ता, समधी, देवरानी, फूफा, ग्वाला, सम्राट, रक्षक, राजेश्वर, वृद्ध, देवी, चुहिया, पाठक, आचार्य, आँख, आगे, बेटा, मामा, चाचा, मधुरभाषी, श्रीमान, भाग्यवान, बुद्धिमान, ठाकुर, मेहतर, देवर, क्षत्रिय, सुशीला, अनुज, गायक, नायक, सहायक, कुमार

(ऐ) द्वन्द्व समास ।

इधर-उधर, यहाँ-वहाँ, जैसा-तैसा, ज्यों-त्यों, आगे-पीछे, बेटा-बेटी, भाई-बहन, माता - पिता,पति-पत्नी, हिलना डुलना, खाते-पीते, डाँट-फटकार, लिखा-पढा, मिला -जुलाकर, हिला-डुला, कहना-सुनना, चलता-फिरता, लेना देना, दिन-रात, राधन-कृष्ण, हार-जीत, लाभ-हानि, पाप-पुण्य, हम-तुम, भला-बुरा, तन-मन-धन, जल-थल, सीधा सच्चा, खली - भूसा, दाना-चारा, मार-काट, हाल-चाल, सुख-चैन, बाल-बच्चे, दो-चार, आनन्द-उल्लास, उतार - चढाव, माँ-बेटा, ऐश-आराम, पुजा-पाठ, सुख-दुःख, जन्म-मृत्यु, प्रेम-प्रीति, आदान-प्रदान, जान-माल, साधन - सामग्री, रोटी-पानी, आना-जाना, ईर्ष्या-द्वेष, आचार-विचार, त्याग-तपस्या, धूप-छाँव, हीरा-मोती, विचार-विनिमय, कुत्ता-बिल्ली, राग-रंग, थोडा-बहुत, सुन्दर-मुन्दर, चाचा-चाची,पव्वा-अद्धा-पौना-सवैया-डयोढा-ढैया-हुंढा - खौंचा-पौंचा ।

तत्पुरुष समास ।

सेनापति, पणकुटीर, अम्बरतल, जन-मन, तत्वज्ञान, बाल-सभा, कामचोर, पशु-वीर, सर्व-श्रेष्ठ, सेनासंचालन, साधन सम्पन्न, प्रसन्नतासूचन, पेशवा-पद, ग्राम-श्री, भूतल, हिम-कण, जगत्माता, मंत्रोच्चार, मंत्रमुग्ध, गणेशपूजन, राजगुरु, राजकुमार, राजपुत्री, चौर्यविद्या, जनमन्थन, सुवर्णलेख, मृगशिशु, छात्रावास, स्नेह-प्रदर्शन, शब्दहीन, शयनगृह, भयमिश्रित । (सम्बन्ध तत्पुरुष समास)

जीवन-निर्वाह, भगवत्भजन, मर्माहत,राजबन्दी, स्वदेशवासी, एकत्वबोध, दिड्मण्डल, निद्रालस, बंगभूमि, सेवाश्रम, विश्वयात्रा, विचारविनिमय, श्रद्धापात्र, राजभवन, विश्वयात्रा, स्नेहसिक्त, निन्दा-रस, रणक्षेत्र, भेदनाशक, ईश्वभक्त, धर्मनायक, चरण-धूलि, शास्त्र-बाह्य, जैन-धर्म, धुमक्कडराज, विश्वपरिक्रमा, विश्वविख्यात, हिमपात, हिरनदल, किरणदल, पुत्रवियोग, तीरथवासी, स्नेह-हीन, भण्डारघर, राजप्रासाद, अभयदान, भयभीत, देवानांप्रिय, युद्धरत, राजसभा, ईर्ष्या-ग्रस्त, हिमालय, यात्रा-कथा, मानवजाति, हिन्दु-धर्म, धुमक्कड धर्म, चिन्ताहीन, पथ-प्रदर्शक

बहुव्रीहि समास ।

दिग-अम्बर, निर्भीकमना, कुसुमायुध, दीर्घायु, चारपाई, प्रज्ञाचक्षु, अल्पमति, गजानन, अनाथ, कमजोर, खड्ग हस्ता, निर्मल, निराश

मध्यमपदलोपी समास ।

पर्णकुटीर, सिंहासन, चित्रलिपि, आनन्दोत्सव, पदयात्रा, हिम-प्रलय, वृत्तसंस्था, वन-फूल, धर्माचार्य

अव्ययीभाव समास ।

यथाविधि, यथा-मति, यथार्थ, प्रतिक्षण, प्रतिरोम, प्रतिवर्ष, आमरण, प्रत्यक्ष, परोक्ष, प्रतिदिन, दिन-दिन, अनायास, बेमतलब, यथाशक्ति, आजीवन, आजन्म

कर्मधारय समास ।

महाकवि, सज्जन, चरण-कमल, धरतीमाता, पीताम्बर, भाषान्तर, नवयुग, विजयलक्ष्मी, सत्संग, कष्ट-कंटक, जीवन-सुमन, गौरव गन्ध, दुर्दशा, महारानी, परमात्मा, चलचित्र, जनगंगा, स्वजाति, स्वेच्छा, मातृभूमि, किरण जाल, पूर्वसूचना, पूर्वाग्रह, स्थलांतर, महाराज,छायामूर्ति, पाषणह्रदय, श्वेतहिम, महावीर

द्विगु समास ।

पंचतत्व, त्रिभुवन, सप्तर्षि, दोपहर, नवरात्रि, चौराहा, पंचवटी, षड्रस, अष्टधातु, सप्ताह, चवन्नी, शताब्दी, त्रिलोक, पंचमुखी, दशाब्दी

उपपद ।

धनुर्धर, मनोहर, गिरिधर, निंदक

(ओ) निम्नलिखित शब्द समूहों के लिए एक शब्द दीजिए ।

१. दो बैलों की जोडी
२. आजीवन घुमनेवाला
३. पति द्वाराा त्यागी गई स्त्री
४. भेड बकरियों का समूह
५. वन में लगनेवाली आग
६. समुद्र में उठनेवाला तूफान
७. निन्दा करनेवाला
८. कुसुम है आयुध जिसका वह
९. कम या ज्यादा
१०. सात दिनों का समूह
११. युद्ध करने की जगह
१२. घोडे पर सवारी करनेवाला
१३. शरीर की चमडी की सिकुडन
१४. युद्ध में लडनेवाला
१५. जिसका मस्तक झुका हुआ है वह

१६. पर्वत को धारण करनेवाला

१७. बर्फ/हिम की वर्षा

१८. भविष्य का निर्देश करनेवाली वाणी

१९. जिसके हाथ में तलवार हो ऐसी स्त्री

२०. घोडों को बांधने की जगह

२१. दिशाएँ ही है वस्त्र जिसका वह

२२. बहुत छोटा रूप होना

२३. सेना का सब से बडा अधिकारी

२४. मर्म को जाननेवाला

२५. किले आदि की दिवारों में उठा हुआ गोल या पहलदार भाग

२६. शरीर के सभी अंगों को ढँक देनेवाला पहनावा

२७. सरलता से पचनेवाला

२८. नदी या समुद्र में पानी का उपर उठना

२९. कान में पहनने की बाली

३०. दिशाएँ बतानेवाला यंत्र

३१. सर्व में श्रेष्ठ

३२. पडोस में रहनेवाला

३३. चारों ओर घूमना

३४. घाव साफ करके दवाई लगाकर पट्टी बाँधनेवाला

३५. एक वृक्ष जिसके फलों से शराब बनाई जाती है

३६. घास-फूस से बनी झोंपडी

३७. जो कैद की सजा भोग चुका है वह

३८. नीले रंग का एक रत्न

३९. नहीं हे नाथ जिसका वह

४०. तीन लोक का समूह

४१. सिंह की आकृतिवाला आसन

४२. जिसने अभी अभी बच्चे को जन्म दिया है वह

४३. चलते समय पाँव से उठनेवाली आवाज/ध्वनि

४४. जिसका विवाह नहीं हुआ है वह युवती/युवक

४५. जिसने अभी जन्म लिया है वह

(औ) निम्नलिखित वाक्यों को सूचनानुसार परिवर्तित कीजिए ।

प्रश्नार्थ वाक्य बनाइए ।

१. दुनिया में पैसे से बडी कोई ताकत नहीं ।

२. ऐसी बात कभी सुनी नहीं है ।

३. आप तो जानते हैं कि मैं राष्ट्रसेवक हूँ ।

४. आप मुझे जानते हैं ।

५. सीता राम से कहती है ।

६. अनाथ बालक प्रथम चोकीदार से कहता है ।

७. दूसरे चौकीदार बालक से पूछता है ।

८. बुढिया पेड तले काम कर रही थी ।

९. लेखिका ने कई वर्ष पूर्व निश्चय किया था ।

१०. सोना खेल-कूद करती है ।

११. कुतिया को घर में आने दो ।

१२. उसे मुहल्ले में जाने दिया करो ।

१३. खर्च के लिए पैसे दे दिया करो ।

उद्‌गारवाचक वाक्य बनाइए ।

१. विनोबा का व्यक्तित्व बडा आकर्षक है ।

२. उस परमात्मा की लीला बडी अनूठी है ।

३. तुम्हारे अन्दरवाला मानव जीवित नहीं बचा है ।

४. शादी में सफेद साडी पहनकर आती है ।

५. ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित निन्दा भी होती है ।

६. पेट से बढकर मुहताज क्या हो सकता है ।

७. भुखी आत्मा की कहानी अनूठी होती है ।

सामान्य भविष्यकाल में बदलिए ।

१. क्या करना चाहते हो ?

२. रानी ने पानी के लिए मुँह खोला ।

३. साधु जप करने के हेतु निकल गये ।

४. उसकी आँखों में आँसू उमड आए ।

५. अभी दूर की मंजिल तय करनी है ।

६. मैने डॉक्टर कह दिया है ।

७. तब एक और सूर्योदय की याद आती है ।

८. विनोबाने अपना विचार बता दिया ।

९. मैने उसे स्वीकार कर लिया ।

१०. आज वह बहुत प्रसन्न थी ।

११. कहना-सुनना तो चलता ही रहता है ।

१२. वे घर कब आनेवाले हैं ?

१३. तुमने विजय पाई ।

सामान्य वर्तमानकाल में बदलिए ।

१. मैंने अपना पुतला ही उसे दिया ।

२. मैं उसे केवल दम्भी कहूँगा ।

३. हम तुम्हें देंगे ।

४. वह डाक्टरी पढ रहा था ।

५. मैं चल जाऊँगी ।

६. बर्फ पिघलने का नाम नहीं लेगी ।

७. मैदान साफ हो गया ।

८. उसीने आज की दुनिया को बनाया है ।

९. अब मैं हिरन नहीं पालूँगी ।

१०. राजीव शाह अपनी डायरी में लिख रहा था ।

अपूर्ण वर्तमानकाल में बदलिए ।

१. हम कोशिश करेंगे ।

२. आपने मेरी इज्जत क्यों उतारी ?

३. भूमिकाने किताब पढी थी ।

४. बालक बाग में खेलता था ।

५. रुपया तुम्हें खा गया ।

६. उसीने आज की दुनिया को बनाया है ।

७. लतिका ने खत लिखा था ।

८. फिर भला तुम्हें खाने को कौन देगा ?

९. अन्दर से काई नहीं बोला ।

१०. मैंने आन्दोलन में साथ दिया ।

११. राजीव शाह के लेख की चर्चा हो रही थी ।

पूर्ण वर्तमानकाल में बदलिए ।

१. घोडे की व्यवस्था कर दी गई ।

२. लेने-देने का रिवाज ही उठ गया ।

३. हम बातें कर रहे हैं ।

४. दोनों में भाईचारा हो गया था ।

५. तुम मुझे भूल गए ।

६. वे तो पहले ही शहर छोड गए थे ।

सामान्य भूतकाल में बदलिए ।

१. कहानी यहीं खत्म हो जाती थी ।

२. वह सो रहा था ।

३. वे सत्ता से अलग रहना चाहते हैं ।

४. पिछले वर्ष इसकी झलक मिली थी ।

५. लडके ने पढा ।

अपूर्ण भूतकाल में बदलिए ।

१. दोनों ने सलाह की ।

२. फिर भला तुम्हें खाने को कौन देगा ?

३. तुम मुझे धोखा दे रहे हो ।

४. वह डाक्टर के पास गई ।

५. उन्होंने पति की प्रतीक्षा नहीं की ।

६. सेनापति ने उत्तर दिया ।

७. वे किसी का बुरा नहीं सोचते ।

पूर्ण भूतकाल में बदलिए ।

१. सब इसी पर संदेह करेंगे ।

२. अंग्रेजी सेनाने मुरार पर अधिकार कर लिया ।

३. मुझे इसमें खुशी नहीं मिली ।

४. वह लडाई के मैदान पर गया हुआ है ।

५. तुम झूठ बोल रहे हो ।

६. वह केवल स्नेह पहचानता है ।

७. तुम मुझे धोखा दे रहे हो ।

८. महारान अशोक को बाँधने जा रही हैं ।

सरल वाक्य में बदलिए ।

१. एक मुँह हटा लेता, तो दूसरा भी हटा लेता था ।

२. उसने आज्ञा दी कि रानी को गिरफ्तार करो ।

३. एक लक्ष्मीबाई थी, जिनकी आत्मा हार मानने से इन्कार करती थी ।

४. वह कुछ बोलना चाहती थी, पर बोल न पाई ।

५. उन दिनों फीस पैसों में नहीं दी जाती थी, बल्कि 'सीधा' दिया जाता था ।

६. उसने खाना खाया और पलंग पर लेट गया ।

७. है तो वह स्वाद, लेकिन बडा कडवा स्वाद है ।

८. जेल में हूँ, इसका दु:ख नहीं है ।

९. विनोबा यश से भालते हैं, पर यश उनके पीछे आता है ।

१०. मेरी सलाह मानो और इण्डोनेशिया चले जाओ ।

संयुक्त वाक्य में बदलिए ।

१. झूरी बैलों को देखकर स्नेह से गद्‌गद् हो गया ।

२. लक्ष्मीबाई के पहुँचने पर उनके ह्रदय उछल पडे ।

३. महारानी इन सब दृश्यों को देखकर दिल ही दिल में जल रही थी ।

४. यह देखकर अंग्रेज सेनापति स्तब्ध रह गए ।

५. यह कहते हुए उन्होंने टोपी उतार ली ।

६. सबेरे ही उठकर वह चल देगा ।

७. बच्चे के रोने से उनकी नींद में खलल पडा है ।

८. गोधूलि कूदकर कंधे पर आ बैठी ।

९. उत्तर में विलम्ब के लिए ख्याल न करें ।

१०. जेल देखे बिना दुनिया के बहुत सारे सत्य प्रकट नहीं होते ।

११. शाकाहारी होने के कारण कुछ दिक्कतें आई ।

१२. डॉक्टर ने पट्टी बाँध दी और पाँच रूपये माँगे ।

मिश्र वाक्य में बदलिए ।

१. इसका प्रतिवाद करने का किसी को साहस न हुआ ।

२. वह किला अभेद्य समझा जाता था ।

३. पहला बाडा किसी विशाल मंदिर की भाँति दिखाई ।

४. लडके को पल भी युग की तरह लग रहा था ।

५. बडे घर की बेटी थी, बडे घर की बहू बनकर ही रहीं ।

६. डरने की कोई बात नहीं है ।

७. एक राजीव शाह ही सहानुभूति दर्शा रहा था।

८. सारी बिरादरी को दावत दी जाएगी ।

९. निंदा कुछ लोगों की पूँजी होती है ।

१०. दुनिया की सर्वश्रेष्ठ वस्तु है धुमक्कडी ।

११. वे आजीवन घूमते ही रहे ।

वाक्य शुद्ध कीजिए ।

१. वह मन्दिर में आतंकवादी घुस गये ।

२. पिताने बेटी को बहुत मारी ।

३. यह किताब का दाम क्या है ?

४. प्रत्येक विद्यार्थीने कमीजें पहन रखीं थीं ।

५. राम ने रोटी खाया ।

६. राम ने रावण को मारी ।

७. मैंने पुस्तक पढी ।

८. गीता सब्जी लेने के लिए बाजार जाता है ।

९. सोहन सुबह सुबह हिन्दी का स्वाध्याय करती है ।

१०. अनेक शहर में काफी बर्फ गिरा था ।

११. चौधरी का नाक कट गया ।

१२. वह मकान में दो स्त्री रहती थी ।

१३. इस कहते हुए उन्होंने टोपी उतारी ।

१४. तुम किताब क्यों पढते है ?

१५. मेरे बडे भाई आरोग्य हो गये ।

निम्नलिखित वाक्यों का कारक बताइए ।

१. माला का पति बाजार के लिए जाता है ।

२. बिल्ली टेबल पर है ।

३. सोहन स्व अध्ययन करता है ।

४. डंडा से साँप को मारता है ।

५. शिक्षक विद्यालय के लिए काम करता है ।

६. वृक्ष से पत्ते तोडते हैं ।

७. सुरेश की पुस्तक लाल है ।

८. सोहन पुस्तक पढता है ।

९. मुर्गा बोलता है ।

१०. सुशीला डंडा से गाय को भगाती है ।

११. मेरे हाथ में से चौक गिडता है ।

१२. पंडितजी आसन पर विराजमान थे ।

प्र-४. (अ) निबंध लेखन ।

१. मेरा प्रिय त्यौहार ।

सभी त्यौहारों में रक्षाबंधन का त्यौहार अधिक प्रिय - भाई बहन के निर्दोष और नि:स्वार्थ प्रेम का प्रतिक - दिवाली में रोशनी - होली में रंग और गुलाल की धूम - दशहरा में धूमधाम - रक्षाबंधन में सिर्फ हृदय का प्रेम - श्रावणी पूर्णिमा - सुहावना मौसम - बहन द्वारा भाई का राखी बाँधने की उत्कटता - कर्तव्य की याद दिलाना - बहन की रक्षा की जिम्मेदारी - स्नेह और पवित्र बंधन - भाई की

खुशहाली मानना - सारी नारीजाति की रक्षा का भार - नारी अबला - भाई को शक्ति साहस का मंत्र - कल्याण की कामना - नया दृष्टिकोण - राखी के धागों द्वारा इतिहास बनना - चितौड की राजमाता कर्मवती और मुगल बादशाह हूमायुं के बीच परस्पर भाई - बहन का रिश्ता राखी भेजकर चितौड की रक्षा की मदद माँगना - एक हिन्दु नारी की रक्षा होना - इकलौटी बहन - दूर रहना - घर पर उत्सव - खुशी का ठिकाना न रहना - बचपन की स्मृतियाँ उमड पडना - हर्ष के आँसू बहना - बहन की मंगल भावनाएं और ममचा, स्नेह द्वारा नवजीवन प्रदान होना - परम आनन्द का अनुभव - सभी कष्टों को भूलाना - 'भैया मेरी राखी के बंधन को न भुलाना' - उपसंहार ।

२. मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना ।

प्रस्तावना - धर्म के नाम पर आए दिन संघर्षों के समाचार - हिन्दु मुस्लिम दंगे - इसाई और मुस्लिम देशों के बीच आपसी टकराव - इजरायल और आरब देश - कहीं पर शिया - सुन्नी टकराव - अपने अपने धर्म को श्रेष्ठ मानने की भावना - धार्मिक कट्टरता - सभी धर्मों में मानव एकता का महत्व - सारी सृष्टि एक ही ईश्वर की रचना - सभी मनुष्य एक परमपिता की सन्तानें - मानवता सच्चा धर्म - सत्य - सभी धर्मों से सहिष्णुता, दया, करुणा, प्रेम, मैत्रीपूर्ण व्यवहार - 'अहिंसा परमो धर्म' - गीता - श्रीकृष्ण - कोई भी मजहब लडना नहीं सिखाता - कट्टर नेताओं और राजनीतिज्ञों के स्वार्थ का परिणाम - दंगा - धर्म पर आधारित शत्रुता से युद्ध या उपद्रव का रूप लेना - हिंसा की आग - माताओं की गोद सूनी - नारियों की माँग का सिंदूर उजडना - बच्चे अनाथ - खून की होलियाँ - विश्व - इतिहास गवाह - इसाईयों और मुसलमानों के बीच कलह - इसाईयों में भी वर्गभेद - शिवाजी और मुगल - गौरक्षा - दु:ख की बात - अपने धर्म को श्रेष्ठ मानना - सभी धर्म ईश्वर, सत्य और मानवता की ओर ले जाते हैं - धार्मिक कट्टरता को बदलने की जरूरत - सर्वधर्म समभाव - स्वर्ग - उपसंहार ।

३. निरक्षरता - एक अभिशाप ।

निरक्षरता का अर्थ - देश में निरक्षरता शापरूप - निवारण के मार्ग - अनिवार्य नि:शुल्क शिक्षा - प्रौढ शिक्षण - 'साक्षरता अभियान' का सरकार का प्रयास - कठिनाइयों और निवारण के उपाय ।

४. मेरा भारत महान ।

पुराना भारत - ऋषिमुनि - भारतीय संस्कृति - भगवान के अवतार - प्राचीन राज - गुलामी - आज का भारत - भ्रष्टाचार - आतंकवाद - समस्याएँ - उपाय - भावी - उपसंहार ।

५. अकाल पीडित किसान की आत्मकथा ।

परिचय - सुखी जीवन - अकाल का तांडव - मनुष्य - पशुधन का नाश - उथलपुथल - दर दर ठोकरें खाना - अंतिम अभिलाषा ।

६. चुनाव केन्द्र पर ।

भारत देश - चुनाव की परंपरा - लोकसभा का चुनाव - सभी दलों का चुनाव का प्रचार - चुनाव का दिन - मतदान केन्द्र पर चुनाव का प्रबंध - मतदान की प्रक्रिया - लोगों की भीड - विविध दृश्य - अंतिम समय - चुनाव में मत का मूल्य - उपसंहार ।

७. यदि मैं अध्यापक होता ।

मेरा विचार - विद्यार्थियों से प्रेम - विद्या की लगन पैदा करना - पढाने का ढंग - विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयत्न - मेरा आदर्श - उपसंहार ।

८. समय का सदुपयोग ।

समय का महत्व - हम समय कैसे नष्ट करते हैं - समय का सदुपयोग कैसे हो सकता है - समय का सदुपयोग और महापुरुष - समय का सदुपयोग विकास - उन्नति - उपसंहार ।

९. मेरा प्रिय खेल ।

खेल - अपने प्रिय खेल का परिचय - प्रिय होने का कारण - अन्य खेलों से तुलना - जीवन में खेल का महत्व - आगे चलकर एक अच्छा खिलाडी बनना - खेल का तरीका - उपसंहार ।

१०. मातृप्रेम

माता की ममता का परिचय - पशु पक्षियों में मातृस्नेह - माता का निस्वार्थ प्रेम - त्याग की भावना - संस्कार सिंचन, सेवा, त्याग और समर्पण का संगम - वात्सल्यमूर्ति माँ के प्रति हमारा कर्तव्य - उपसंहार ।

११. अगर परीक्षाएँ न होती ।

लगातार परीक्षाओं का सामना - सच्चे ज्ञान और विद्या के उपासक पैदा होते - परीक्षा के अनिष्ट - गहरा ज्ञान पाने के बजाय प्रमाणपत्र प्राप्ति का ध्येय - परीक्षा का महत्व - आज की परीक्षाएँ - उपसंहार ।

१२. हमारे राष्ट्रीय त्यौहारों का महत्व ।

भिन्न भिन्न राष्ट्रीय त्यौहार - गौरव गाथा - राष्ट्रीय घटनाओं के स्मारक - राष्ट्रीय पुरुषों के संदेशवाहक - राष्ट्र की एकता - राष्ट्रप्रेम और संस्कृति के प्रतीक - आनंद प्राप्ति के साधन देश के प्रति हमारा कर्तव्य - उपसंहार।

१३. रुपया बोलता है ।

जगत में रुपयों का महत्व - व्यवहार में रुपयों का प्राधान्य - जन्म - भ्रमण - अस्थायी जीवन - अच्छे बुरे अनुभव - घिस जाना - लोकप्रियता - आखिरी इच्छा।

१४. जल ही जीवन ।

पृथ्वी में जल - जल के बिना जीवन असंभव - प्राप्ति के स्त्रोत - प्राप्ति के बाद संग्रह की व्यवस्था - जल के बचाव में समुचित उपयोग - मानव, पशु-पक्षी, वृक्ष - पर्यावरण सुरक्षा ।

१५. विज्ञान - वरदान या अभिशाप ।

विज्ञान का युग - आविष्कार - यातायात के साधन - समाचार - मनोरंजन सुविधाएँ - चिकित्सा क्षेत्र में, युद्ध के क्षेत्र में आविष्कार - विज्ञान का उपयोग मानव संहार के लिए नहीं मानव उन्नति के लिए होना - विज्ञान का उज्जवल भविष्य ।

१६. बिजली की करामतें ।

विज्ञान - बिजली का आविष्कार - आज के जीवन में बिजली का महत्व - उसका उपयोग किन किन क्षेत्रों में - चिकित्साशास्त्र एवं उत्पादन के क्षेत्रों में उपयोग ।

१७. हमारे जीवन में खेलों का महत्व ।

मानव जीवन - खेलों का महत्व - नीरस बनते जीवन में खेलों की आवश्यकता - खेल के प्रकार - आबाल वृद्ध के लिए उपयोगी - खेल से लाभ - शारीरिक, मानसिक और सामाजिक - आंतरराष्ट्रीय स्तर पर भ्रातृत्व का प्रसार ।

१८. आतंकवाद ।

परिचय - आतंकवाद क्यों - कहाँ कहाँ क्या क्या करते हैं - सामना अत्यावश्यक - कौन करे - कैसे करे - कब करे - राजनीति - संभावना - सफलता ।

१९. महँगाई - एक विकट समस्या ।

प्रस्तावना - अर्थशास्त्र - महँगाई का अर्थ और स्वरूप - महँगाई के कारण - महँगाई के दुष्परिणाम - महँगाई के नियंत्रण के उपाय - रोकना - उपसंहार ।

२०. ऋतुराज वसंत ।

आगमन - ऋतुराज वसंत का स्वागत - सृष्टि का शृंगार - फाल्गुन महीने के साथ ही शिशिर का अंत - स्वागत के लिए दशां दिशाएँ तैयार - बाग, वाटिकाओं में उसके स्वागत की तैयारी - नई नई कोपलें - मंजरियां - खुशी प्रकट - फूलों का मौसम - कोयल की कूक - नए जीवन का उल्लास - वसंत पंचमी - होली का त्यौहार - मनुष्य का प्रेम - मुस्कुराती प्रकृति - वसंत को श्रेष्ठ मानना - उपसंहार ।

२१. दूरदर्शन से लाभ-हानि ।

दूरदर्शन - अनोखा आविष्कार - दूरदर्शन का जादू - संदेशा व्यवहार का उत्तम माध्यम - लोक जागृति - लोक शिक्षण - विश्व को नजदीक लाता है - विद्यार्थीयों के लिए बाधक और साधक अनोखा उपहार ।

२२. चाँदनी रात में सैर ।

चाँदनी रात - पूनम की रात - नदी का किनारा - नाव में घूमना - सैर का आनंद - चाँदनी रात में प्राकृतिक सौंदर्य - नाव का टकराना - किनारा तक पहुँचना - आनंदोत्सव - उपसंहार ।

२३. कुर्सी मेरी, मैं कुर्सी का ।

आज का नेता - कुर्सी पाना ही एक मात्र लक्ष्य - झूठे वचन - आदर्श की खोखली बातें - लक्ष्य की सिद्धि - कुर्सी का मोह - राजनीति के खेल से कुर्सी बचाना - कुर्सी न छोडने का यत्न - भ्रष्टाचार - उपसंहार ।

२४. निरक्षरता - एक अभिशाप ।

२५. मेरा भारत महान ।

२६. दूरदर्शन से लाभ-हानि ।

(ब) निम्नलिखित रूपरेखा के आधार पर से कहानी लिखकर उसे उचित शीर्षक दीजिए ।

१. बूढा किसान - चार बेटे - चारों आलसी - किसान हंमेशा दुखी और चिंतित - किसान मृत्युशय्या पर - बेटों से कहना, ''खेत में धन'' - किसान की मृत्यु - बेटों का खुदाई करना - कुछ न मिलना - खेत में अच्छी फसल - पिता की बात का अर्थ समझ में आना - सीख ।

२. एक चोर - राजमहल में जाना - एक कपडा और थोडी रोटियाँ चुराना - राजा का चोर के रूप में भेस बदलकर आना - खजाने की ओर ले जाना - खजाना बताना और कहना, ''चलो, हम इधर से चोरी करें'' - उत्तर, ''मुझे जितनी जरूरत थी ले लिया'' - राजा का खुश होना - चोर को पुरस्कार देना - सीख : सचमुच, संतोष और सच्चाई उत्तम गुण हैं, उनसे अच्छा फल मिलता ही है ।

३. दो मित्र - सागर में तूफान - नौका का टूटना - दोनों का एक ही तख्ते का सहारा लेना - तख्ता केवल एक का भार सँभालने में समर्थ - 'मेरी माँ को संभालो' - इस सूचना के साथ अविवाहित मित्र का तख्ते को छोड देना - दूसरे मित्र का बचना - सीख : सच्ची मित्रता नि:स्वार्थ और त्यागपूर्ण होती है । मित्र हो तो ऐसा, जो ढाल समान हो ।

४. पढाई में कमजोर लडका - एक ही कक्षा में दो बार अनुत्तीर्ण होना - जंगल में आत्महत्या करने जाना - एक बंदर का बच्चा - पेड पर चढने की कोशिश - बार बार गिरना - अंत में सफलता - बंदर के बच्चे से सीख - लडके का उत्साह - घर लौटना - पढाई में जुट जाना - उत्तीर्ण होना - सीख : परिश्रम करने पर अवश्य सफलता मिलती है, परिश्रम ही सफलता की कूंजी है ।

५. एक जमींदार - उसका परिचय - अपनी बहुत सी जमीन, जायदाद और नौकर चाकर - फिर भी खेती में सदा घाटी रहता था - दिन प्रतिदिन आमदनी घट रही

थी - इससे चिंतित - एक जमींदार को चिंता का कारण पूछा - जमीनदार ने सारा हाल कह सुनाया - मित्र की सलाह - हररोज सुबह शाम खेत की सैर किया करो, तुम्हारी आमदनी अवश्य बढ जायेगी - सलाह मान ली - दूसरे दिन खेत पर पहुँचा - नौकर गायब - कुछ गप्पे लगा रहे हैं - औजार गायब - सारी बात समझ में आ गई - आँखें खुलना - खुद काम में लग जाना - सभी में उत्साह - आमदनी बढना - सीख : स्वयं पसीना बहाये बिना संपत्ति की आशा रखना व्यर्थ है, अपना कारोबार नौकरों के भरोसे कभी नहीं छोडना चाहिए ।

६. भीड के लोगों का एक आदमी पर पत्थर फेंकना - एक महात्मा का आना - लोगों द्वारा उस व्यक्ति के पापों की शिकायत - महात्मा से न्याय की माँग - महात्मा का न्याय - 'ठीक है, पत्थर मारो, पर पहला पत्थर वह उठाए, जो पूर्णत: निष्पाप हो' - किसी का आगे न आना - भीड का चुप रहना - महात्मा का उपदेश - सीख : दूसरे को दंड देने से पहले अपने व्यवहार की ओर भी देखना चाहिए ।

७. एक सुहावना वन - इन्द्र का आगमन - वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य को देखकर भगवन खुश - फिर भी आश्चर्य - एक सूखे वृक्ष पर दु:खी तोता - प्रश्न, 'हरे भरे वृक्षों को छोडकर इस वृक्ष पर क्यों ? - उत्तर, ''यह वृक्ष भी पहले हरा-भरा और फल फूलों से संपन्न था, अब दुर्दिन में साथ कैसे छोड़ दूं ? - भगवान का वरदान - सीख : किसी के उपकार को कभी नहीं भूलना चाहिए ।

८. एक गरीब युवक - अंधी माता - नि:संतान पत्नी को धन का लोभ - युवक का तपस्या करना - भगवान का प्रसन्न होना - केवल एक वरदान माँगने के लिए कहना - युवक की उलझन - अचानक युक्ति सूझना - 'मेरी माँ मेरे महल में अपन पोते को सोने की चम्मच से दूध पीते हुए देखे' - वरदान मिलना - देवता प्रसन्न - सीख : बुद्धि से काम लेने पर कठिन प्रश्न भी आसानी से हल हो जाते हैं ।

९. एक राजा -बीमारी - वैद्य की असफलता - किसी बूढे की सलाह - किसी सुखी मनुष्य का कुर्ता पहनो - खोज - महेनती किसान को देखना - किसान सिर्फ धोती पहने था - सीख : परिश्रम से ही स्वास्थ्य प्राप्त होता है और सच्चा सुख मिलता है ।

१०. एक भेड़िया - गले में हड्डी अटकना - सारस से मुलाकात - हड्डी निकालने की प्रार्थना - सारस को भय - भेड़िये का इनाम के लिए वादा - सारस का हड्डी खींच लेना - बाद में इनाम माँगना - भेड़िये में परिवर्तन - क्रोध में आ जाना - 'तेरा सिर न कुचल देना ही तेरा इनाम' - उपदेश - सीख : दुष्ट कभी अपनी दुष्टता नहीं छोडता। दुष्ट व्यक्ति कितना भी अच्छा बनने का दिखावा करे, तो भी उस पर विश्वास नहीं करना चाहिए ।

११. गधे पर नमक का बोझ - नदी पार जाना - अचानक गधे का नदी में गिरना - बोझ का हल्का होना - दूसरे दिन मालिक का अधिक बोझ लादना - गधे का जान बुझकर नदी में गिरना - गधे को सबक सिखाने का मालिक का संकल्प - अगले दिन रुई का बोझ लादना - गधे का नदी में गिरना - सीख : जो काम से जी चुराता है, बाद में उसे बुरा फल भोगना पड़ता है । अपना काम इमानदारी से पुरा करना चाहिए ।

१२. एक निर्दयी राजा - गुलाम को दंड - गुलाम का जंगल में भाग जाना - सिंह से भेट - उसके पैर से कांटा निकालना - मित्रता - गुलाम की गिरफ्तारी - मौत की सजा - उसी भूखे सिंह के सामने सिंह का स्नेहपूर्ण व्यवहार - दोनों की रिहाइ - सीख : सचमुच, खूँखार पशु भी अपने साथ किए गए उपकार को नहीं भुलते ।

अथवा

नीचे दिए गए नाम और पते के आधार पर ही निम्नलिखित पत्र लिखिए ।

१. ४, श्रीरंग, नवरंगपुरा, अहमदाबाद से महेश शाह मुंबई में रहनेवाले अपने मित्र मुकेश को व्यायाम का महत्व समझाते हुए पत्र लिखता है ।

२. १५, विवेकानंद सोसायटी, विसनगर से स्मिता अपनी सूरत निवासीनी अपनी सखी जागृति को चक्षुदान का महत्व बताती हुई पत्र लिखती है ।

३. २१, हनुमान सदन, मांजलपुर, बड़ौदा से सलीम शेख 'कौमी एकता' पर अपने विचार बम्बई निवासी अपने मित्र कनु पहेल के नाम पत्र लिख भेजता है ।

४. ७, विवेकानंद सोसायटी, बड़ौदा से मीता कुमारी एस.एस.सी. परीक्षा उत्तीर्ण होने के बाद अपने भावी कार्यक्रम के बारे में कश्मीर निवासी अपनी सखी रीटा शाह को पत्र लिखती है ।

५. १७, चांदनी चौक, दिल्ली से अनिल शाह अहमदाबाद निवासी अपने मित्र सुनील को 'गणतंत्र दिन' की परेड का वर्णन लिखता है ।

६. ५, मृणाल सोसायटी, महात्मा गांधी रोड, बड़ौदा से अंजना पटेल अपनी सखी प्रिती को विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का महत्व बताते हुए पत्र लिखती है ।

७. १९, सरस्वती नगर, राजकोट से गौरांग अपने मित्र रवि को उसके जन्मदिन के अवसर पर बधाई पत्र लिखता है ।

८. ७, 'मल्हार' सुरावन्ती पार्क, सुरम्यनगर, स्वामि रोड, सुरत से अनिल शाह बड़ौदा निवासी अपने मित्र तुषार पटेल को अपने स्कूल द्वारा आयोजित 'वृक्षारोपण समारोह' का वर्णन लिख भेजता है ।

९. ४०, प्रताप नगर, बड़ौदा से अजय देसाई सुरत निवासी कनक मित्र को एस.एस.सी. कक्षा के बिदाई समारोह का वर्णन लिख भेजता है ।

१०. लक्ष्मी अपार्टमेन्ट-१, वडनगर, अमरावती से 'चंद्रिका सोनारा' रामनगर निवासीनी अपनी सहेली चेतना को रक्तदान का महत्व बताते हुए पत्र लिखती है ।

११. ६, कीर्ति सोसायटी, बड़ौदा से काश्मीरा पटेल पादरा निवासी अपनी सखी रीमा पटेल को संचयिका का महत्व बताकर उसे छोटी बचत करने को अनुरोध करती है ।

१२. ३२, अंबिका सोसायटी, पादरा से विनु पटेल बड़ौदा निवासी अपने मित्र कनु पटेल को टेलिविजन देखने का अधिकतम शौक पढाइ में बाधक बनता है, यह समझाते हुए पत्र लिखता है ।

१३. १५, सर्वोदय सोसायटी, महेसाना से कुंदन अपनी बड़ौदा निवासी सखी भारती को हिन्दी भाषा का महत्व बताते हुए एवं हिन्दी बोलने का अनुरोध करते हुए पत्र लिखती है ।

प्र-५. (अ) (१) निम्नलिखित विधानों की सुयोग्य पूर्ति के लिए दिए गए पर्यायों में से किसी एक को चुनकर पुरा वाक्य फिर से लिखिए।

१. 'हाय बाईजी ! मैं मरी !' के आर्तनाद के साथ .....
- सुंदर भाग गई ।
- सुंदर घोड़े से गिर गई ।
- सुंदर मर गई ।

२. अंग्रेज सेनापति इस परिणाम पर पहुँचा कि .....
- पहले ग्वालियर का किला जीत लिया जाय ।
- कालपी से सेना हटा ली जाय ।
- सारे विद्रोह की जान रानी लक्ष्मीबाई है ।

३. अनाथ बालक की सारी छटपटाहट दूर हो गई, क्योंकि .....
- ठंडी हवा का झोंका उसे तर कर गया ।
- उसे जगत्माता मिल गई ।
- रिमझिम रिमझिम वरखा शरू हो गई थी ।

४. सुभाषबाबू कहते हैं कि जिसने जेल नहीं देखा, उसने कुछ नहीं देखा, क्योंकि .....
- जेल का जीवन अनूठा है ।
- आदमी को सुख-दुख दोनों का अनुभव करना चाहिए ।
- जेल में बहुत सारे सत्य प्रकट होते हैं ।

५. डॉ. चिटणीस बाँडुंग चले गए थे, क्योंकि .....
- वहाँ वैज्ञानिकों का सम्मेलन होनेवाला था ।
- हिमपात के समय वह एक सुरक्षित स्थान था ।
- वहाँ के एक विज्ञान संस्थान ने उनको आमंत्रित किया था ।

६. लेखक जेलखाने में दुखी नहीं है, क्योंकि .....

- वहाँ उन्हें सभी तरह की सुविधाएँ मिलती हैं ।
- दुःख को ही वे सच्चा जीवन मानते हैं ।
- मातृभूमि के लिए दुःख सहना गर्व की बात है ।

७. दूसरे बाड़े में बहुत से पंडित आए थे, क्योंकि .....

- बाड़े के मालिकने उन्हें भोजन का निमंत्रण दिया था ।
- उन्हें बाड़े के मालिक से कुछ शिकायतें करनी थी ।
- वहाँ एक बहस का आयोजन किया गया था ।

८. इन्द्र को बड़ा ईर्ष्यालु माना जाता है, क्योंकि .....

- स्वर्ग में कोई काम न होने से वह निठल्ला रहता है ।
- अन्य देवताओं की उपासना ज्यादा होती है ।
- दूसरे देवता इन्द्र से ज्यादा सुंदर है ।

९. सैनिक दो-तीन साल फौज में रहकर उब गया था, क्योंकि .....

- पहाड़ी हवाला उसके स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर हुआ था ।
- वहाँ उसे हमेशा अपने स्त्री-बच्चे की याद सताती रहती थी ।
- साथी सैनिक उससे ज्यादा मेल-जोल नहीं रखते थे ।

१०. धुमक्कड़ दुनिया की सर्वश्रेष्ठ विभूति है, क्योंकि .....

- उसीने आज की दुनिया को बनाया है ।
- उसी के पास सब से अधिक अनुभव होते हैं ।
- उसी के पास ही अधिक ज्ञान है ।

११. रानी पेशवा के राज्यभिषेक समारोह में शामिल नहीं हुई, क्योंकि .....

- वे सेना के संगठन में लगी हुई थी ।
- वे इसे देखकर दिल ही दिल में जल रही थी ।
- विधवा होने के बाद इन्होंने यह सब छोड़ दिया था ।

१२. विनोबाजी दो सेर दहीं पर अपना दैनिक निर्वाह करते थे, क्योंकि .....

- दूध दहीं खाने की प्रतिज्ञा थी ।
- पेट के अलसर के कारण वे सघन पदार्थ पचा नहीं सकते थे ।
- दूध दहीं के अलावा कुछ पसंद नहीं था ।

१३. विष्णु प्रभाकर की माँ सदा चिन्तित रहती थीं, क्योंकि .....

- उनके बेटे पढ़ाई में कमजोर थे ।
- पति उनकी एक नहीं सुनते थे ।
- घर की आर्थिक परिस्थिति अच्छी नहीं थी ।

१४. सोमा बुआ की रंगी हुई साड़ी में चमक नहीं आई थी, क्योंकि .....

- वह साड़ी बहुत पुरानी हो चुकी थी ।
- उन्होंने उसे मोड़ नहीं दिया था ।
- साड़ी अच्छी तरह साफ नहीं हुई थी ।

१५. हिरनी का नाम सोना रखा गया था, क्योंकि .....

- उसका शरीर सुनहरे रंग का था ।
- उसे पीली वस्तुएँ बहुत प्रिय था ।
- वह हमेशा सोती रहती थी ।

१६. सम्राट अशोक के माथे पर बल पड़ गए क्योंकि .....

- उसे उतरना था और हाथी बैठ नहीं रहा था ।
- उसे बताया गया था कि कलिंग के राजमहल में भय है ।
- ब्रभु उसे देखकर जोर-जोर से भौंकने लगा ।

१७. हीरा मोती ने गया के यहाँ नाँद की तरफ आँखें तक न उठाई, क्योंकि .....

- अपना अपमान उनसे सहन नहीं हो रहा था ।
- झूरीने उन्हें खूब खिला-पिलाकर भेजा था ।
- वे जानते थे कि नाँद में सूखा भूसा भी नहीं है ।

१८. कालपी में असली युद्ध .....

- होने से पहले ही अंग्रेज भाग खड़े हुए ।
- रानी और अंग्रेज सेना के बीच हुआ ।
- रानी और तात्या टोपे के बीच हुआ ।

१९. दूसरे बाड़े का मालिक बालक से जल्दी नहीं मिल सकता था, क्योंकि .....

- अभी उसके बाहर आने का समय नहीं हुआ था ।
- वह पंडितों की बहस में उलझा हुआ था ।
- अभी उसका पूजा-पाठ पूरा नहीं हुआ था ।

२०. लड़का चलती हुई लाश के समान दिखाई दे रहा था, क्योंकि .....

- अपने अपमान से वह बहुत निराश हो गया था ।
- भूख की आग ने उसे बेहाल बना दिया था ।
- चलते-चलते वह बहुत थक गया था ।

२१. फौजी सिपाही को पैसों की फिक्र नहीं थी, क्योंकि .....

- फौजी को काफी अच्छा वेतन मिलता था ।
- फौजी एक धनिक जमीनदार का बेटा था ।
- उसकी कमर में दो हजार रूपये बँधे हुए थे ।

२२. हिरन अपने पालनेवाले से डरता नहीं, क्योंकि .....

- पालनेवाले से उसे आत्मीयता हो जाती है ।
- वह क्रोध के भाव को समझ नहीं सकता ।
- वह डरता नहीं, डराता है ।

२३. मानिकचन्द ने मदन को सैफ की चाबी नहीं दी, क्योंकि .....
- सैफ की चाबी को वह जिंदगी की चाबी समझता है और उसे देना वह अपना विनाश समझता है ।
- सैफ की चाबी कोई चुराकर ले गया था ।
- सैफ की चाबी खो गई थी ।

२४. लेखक सुभाषबाबू प्रतिदान की आकांक्षा नहीं रखना चाहते, क्योंकि .....
- उँचे सत्तर के कर्मी के लिए यह उचित नहीं है ।
- उन्होंने किसी को किसी तरह का दान दिया ही नहीं है ।
- आकांक्षा के पूरा न होने पर बड़ा दुःख होता है ।

२५. विनोबा चाहकर भी मौन-व्रत का पालन नहींकर पाते थे, क्योंकि .....
- उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था ।
- लोग उन्हें बोलने के लिए बाध्य कर देते थे ।
- डॉक्टरों के अनुसार उनके लिए मौन रहना ठीक नहीं था ।

२६. पक्षी भू-मध्यरेखा की ओर उड़ रहे थे, क्योंकि .....
- उन्हें उस पर स्थित घने वनों में जाना था ।
- उन्हें हिम-प्रलय के खतरे का अंदाज लग गया था ।
- यह उनका हर साल का पुराना नियम था ।

२७. बभ्रु अमिता के पीछे-पीछे चल रहा था, क्योंकि .....
- अमिता उसे पुचकार रही थी ।
- राजमाताने उसे अमिता के साथ भेजा था ।
- वह अपनी बालिका स्वामिनी की रक्षा के लिए तत्पर था ।

२८. मिशनरी निंदक निर्लिप्त और निष्पक्ष होते हैं, क्योंकि .....
- वे धार्मिक प्रवृत्ति के होते हैं ।
- वे केवल अपने मित्रों की ही निंदा करते हैं ।
- मौका आने पर वे अपने बाप की निंदा करने में भी नहीं चूकते ।

(२) निम्नलिखित विभाग 'अ' में पाठों के लिए गए है और विभाग 'ब' में संबंधित लेखकों के नाम दिए गए हैं । पाठ का नाम लिखकर उसके सामने सही लेखक का नाम लिखिए ।

१.

'अ'	'ब'
१. रोटी	१. मन्नू भण्डारी
२. अकेली	२. कृष्णा बंसल
	३. डॉ. जयंत नालीकर
	४. सतीषकुमार

२. 'अ' 'ब'

१. हिमप्रलय १. भगवतीचरण वर्मा

२. रूपया तुम्हें खा गया २. महादेवी वर्मा

३. यशपाल

४. डॉ. जयंत नार्लीकर

३. 'अ' 'ब'

१. बचपन के वे दिन १. प्रेमचंद

२. दो बैलों की कथा २. विष्णु प्रभाकर

३. जैनेन्द्र कुमार

४. 'अ' 'ब'

१. अनाथ १. जैनेन्द्रकुमार

२. अपना-पराया २. महादेवी वर्मा

३. वि.स. खाण्डेकर

४. विष्णु प्रभाकर

५. 'अ' 'ब'

१. रूपया तुम्हें खा गया १. जैनेन्द्रकुमार

२. विनोबाजी से मुलाकात २. भगवतीचरण वर्मा

३. सतीशकुमार

६. 'अ' 'ब'

१. अशोक का हृदय परिवर्तन १. सुभाषचंद्र बोझ

२. कलंक का बोझा २. जैनेन्द्रकुमार

३. यशपाल

४. महादेवी वर्मा

७. 'अ' 'ब'

१. झाँसी री रानी लक्ष्मीबाई १. विष्णु प्रभाकर

२. निंदारस २. इन्द्र विद्यावायस्थन्ति

३. हरिशंकर परसाई

४. यशपाल

८. 'अ' 'ब'

१. सोना हिरनी १. विष्णु प्रभाकर

२. अनाथ २. महादेवी वर्मा

३. मन्नू भण्डारी

४. वि.स. खाण्डेकर

९.	'अ'	'ब'
	१. रोटी	१. मन्नू भण्डारी
	२. अकेली	२. कृष्णा बंसल
		३. डॉ. जयंत नार्लीकर
		४. सतीशकुमार
१०.	'अ'	'ब'
	१. हिमप्रलय	१. यशपाल
	२. दो बैलों की कथा	२. डॉ. जयंत नार्लीकर
		३. प्रेमचंद
		४. जैनेन्द्रकुमार
११.	'अ'	'ब'
	१. धुमक्कड़ धर्म	१. भगवतीचरण वर्मा
	२. विनोबाजी से मुलाकात	२. राहुल सांकृत्यायन
		३. वि.स. खाण्डेकर
		४. सतीशकुमार
१२.	'अ'	'ब'
	१. बचपन के वे दिन	१. मन्नू भण्डारी
	२. निंदा-रस	२. विष्णु प्रभाकर
		३. कृष्णा बंसल
		४. हरिशंकर परसाई
१३.	'अ'	'ब'
	१. अकेली	१. मन्नू भण्डारी
	२. सोना हिरनी	२. महादेवी वर्मा
		३. भगवतीचरण वर्मा
		४. सतीशकुमार
१४.	'अ'	'ब'
	१. कलंक का बोझा	१. कृष्णा बंसल
	२. धुमक्कड़ धर्म	२. सुभाषचंद्र बोझ
		३. सतीशकुमार
		४. राहुल सांकृत्यायन

(३) निम्नलिखित विभाग 'अ' में पात्रों के नाम दिए गए हैं और विभाग 'ब' में पात्रों की उक्तियाँ दी गई हैं । सही पात्र का नाम लिखकर उसके सामने सही उक्ति लिखिए ।

१.

'अ'	'ब'
१. भटियारे की पत्नी	१. जहाँ मौत मीले वहाँ जाती हूं ।
२. भटियारे की बहन बच्चे की माँ	२. भटियारे की बहन बच्चे की माँ
२. मानिकचंद	१. सेफ की चाबी जिन्दगी की चाबी है ।
मदन	
डॉ.जयलाल	

२.

'अ'	'ब'
१. सोमाबुआ	१. क्या खाना और क्या पकाना ।
राधा भाभी	
नन्दा	
२. मदन	२. तुम्हारे अन्दरवाला मानव मर चुका है ।
किशोरीलाल	
डॉ.जयलाल	

३.

'अ'	'ब'
१. राजीव शाह	१. बधाई ! इन्द्र पर आक्रमण सफल हुआ है ।
रिचर्ड होम्स	
डॉ.वसंत	
२. लेखक	२. सोलह विद्या निदान हो गए हैं ।
लेखक की नानी	
लेखक की पड़दादी	

४.

'अ'	'ब'
१. गोपाल	१. तुम कलिंग की महारानी हो ।
अशोक	
अमिता	
२. लक्ष्मीबाई	२. हाय बाईजी ! मैं मरी ।
मुन्दर	
सुन्दर	

५.

'अ'	'ब'
१. हीरा	१. नहीं हमारी ज्ञाति का यह धर्म नहीं है ।
मोती	
भैंरो की लड़की	

	२. राजीव शाह	२. किन्तु अगले साल पृथ्वी मनुष्यहीन हो जाएगी ।
	डॉ.वसंत	
	रिचर्ड होम्स	

६.

‘अ’	‘ब’
१. बालक विष्णु	१. आपने मेरी इज्जत क्यों उतारी ?
छोटाभाई	
राजकुमार	
२. नन्दा	२. मेरा कौन कमानेवाला बैठा है ?
सोमाबुआ	
राधाभाभी	

७.

‘अ’	‘ब’
१. पहले बाड़े का मालिक	१. क्या चोरी का इरादा है ?
दूरे बाड़े का मालिक	
पहरेदार	
२. राधाभाभी	२. क्या हो गया बुआ क्यों बड़बड़ा रही हो ?
संन्यासी	
किशोरी	

८.

‘अ’	‘ब’
१. गया की पत्नी	१. सुखे भूसे के सिवा और कुछ न दूँगी, खाएँ चाहे मरे।
गया	
झूरी की पत्नी	
२. लेफ्टिनेंट बॉकर	२. रानी विद्रोहियों में से सबसे अधिक वीर और सेना
सेनापति ह्यूरोज	संचालन में कुशल थी ।
मैलिसन	

९.

‘अ’	‘ब’
१. किशोरीलाल	१. तुमने लाज रख ली ।
भागीरथ जी	
राधा भाभी	
२. सोमाबुआ	२. मर अभागे, तू मुझे और क्या क्या दिखाएगा ?
अमिता	
फौजी की स्त्री	

१०.

‘अ’	‘ब’
१. हीरा	१. तुम्हारी तो इसने जान ही ले ली थी ।
मोती	
गया	

	२. विनोबा	२. इतना लम्बा रास्ता क्यों ले रहे हो ?
	लेखक	
	प्रभाकर	
११.	'अ'	'ब'
	१. अनाथ बालक	१. क्या इस दुनिया में ईश्वर है ?
	बुढ़िया	
	पहरेदार	
	२. सोमाबुआ	२. मुझे क्या बावली ही समझ रखा है, जो बिना बुलाए
	राधाभाभी	चली जाऊँगी।
	नन्दा	
१२.	'अ'	'ब'
	१. किशोरीलाल	१. धोखा तुम अपने को दे रहे हो ।
	मदन	
	मानिकचंद	
	२. फौजी	२. हजूर को भी तशरीफ ले जाना है ।
	फौजी की पत्नी	
	भटियारा	
१३.	'अ'	'ब'
	१. अशोक	१. तुम तो बहुत सुन्दर हो ।
	अमिता	
	गोपाल	
	२. हिता	२. प्रासाद में भय है । सम्राट प्रतीक्षा करें ।
	कंचुली	
	गोपाल	
१४.	'अ'	'ब'
	१. मगध के सैनिक	१. देवानांप्रिय मगध-सम्राट की जय ।
	कलिंग के सैनिक	
	कलिंग के लोग	
	२. नन्दा	२. सम्बन्धी न रहे कोई रिश्ता थोड़े ही टूट जाता है ।
	पड़ोस की बहू	
	राधा	
१५.	'अ'	'ब'
	१. हीरा	१. कहते हैं, भगवान सबके उपर दया करते हैं ।
	मोती	
	भैरो का लड़का	

	२. पहले बाड़े का मालिक दूसरे बाड़े का मालिक बुढ़िया	२. फिर भला तुम्हें खाना कौन देगा ?

१६.

'अ'	'ब'
१. मामा मामा का मित्र चाचा	१. अब हम तुम्हारी इज्जत कभी नहीं उतारेंगे ।
२. फौजी मुसाफिर भटियारा भटियारे की पत्नी	२. कहीं कुछ फरेब है, कुछ ऐयारी ।

१७.

'अ'	'ब'
१. मानिकचंद मदन किशोरीलाल	१. तुम्हारे पाप का प्रायश्चित मैं कर चुका हूँ ।
२. डॉ. वसंत रिचर्ड होम्स राजीव शाह	२. कहिए, वहाँ बर्फ का क्या हाल है ?

१८.

'अ'	'ब'
१. लेखक विनोबा प्रभाकर	१. आ गए विश्वयात्री ।
२. हिता मंत्री सम्राट अशोक	२. कलिंग की महारानी आदेश दें, क्या चाहती हैं ?

(ब) १. निम्नलिखित परिच्छेद को पढ़कर उसके संबंध में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में अपने शब्दों में लिखिए ।

वृक्ष तो वन के सर्वस्व होते हैं । उनके बिना वन को वन कहेगा ही कौन ? यही सम्बन्ध जीवन और शिक्षा में है । ''विद्याविहीनो नर पशुः'' कह कर जीवन में शिक्षा के महत्व को ही रेखांकित किया गया है । शिक्षा के बिना मनुष्य गँवार है ।

गँवार व्यक्ति पशु की तरह महेनत मजदूरी तो कर सकता है, पर उसका उचित बौद्धिक विकास संभव नहीं हो सकता। वह न अपनी प्रगति कर सकता है, न समाज-राष्ट्र को समृद्ध बनाने में सक्रिय सहयोग दे सकता है । शिक्षा के बिना उन्नत जीवन संभव ही नहीं है । आज विश्व के विकसित देश शिक्षा के बल पर ही

आगे बढ़े हैं । शिक्षा के कारण उन देशोंने कृषि, व्यापार, उद्योग आदि क्षेत्रों में अपार उन्नति की है। शिक्षा के बल पर ही भारत किसी समय 'जगद्‌गुरु' कहलाताथा ।

प्रश्न :

१. वन के सर्वस्व कौन हैं ?

२. गँवार व्यक्ति अपना विकास क्यों नहीं कर पाता ?

३. विकसित देशों ने किन-किन क्षेत्रों में उन्नति की है ?

४. शिक्षा के बिना क्या संभव नहीं है ?

५. भारत 'जगद्‌गुरु' किस बल पर कहलाता था ?

६. इस परिच्छेद को उचित शीर्षक दीजिए ।

२. पुस्तक का मानव जीवन में बहुत बड़ा महत्व है । मानवने सर्वप्रथम पुस्तक का आरंभ अपने अनुभूत ज्ञान को विस्मृति से बचाने के लिए किया था । विकास के आदिकाल में पत्ते, ताड़-पत्र, कांस्य-पत्र आदि साधन इस ज्ञान संग्रह में सहायक रहे हैं, ऐसा पुस्तक का इतिहास स्वयं बताता है । पुस्तकें मानव को अपना अनुभव विस्तृत करने में सहायक हैं, साथ ही अपने पूर्वजों के सभी प्रकार के कृत्यों को जीवित रखने की जिम्मेदारी भी सँभाली हुई है । आज के युग में पुरातन वीर, धार्मिक महात्माओं, ऋषियों, नाटककारों, कवियों आदि का पता हम इन्हीं पुस्तकों के सहारे पाते हैं । पुस्तकें ही आंतरराष्ट्रीय विचारक्षेत्र में विभिन्न देशों के दृष्टिकोणों को एक आधार पर सोचने के लिए बाध्य करती हैं ।

प्रश्न :

१. मानव जीवन में किसका बहुत महत्व है ?

२. मानव ने पुस्तक का आरंभ किसलिए किया था ?

३. विकास के आदिकाल में ज्ञान-संग्रह के कौन से साधन थे ?

४. मानव को अपना अनुभव विस्तृत करने में कोन सहायता करता है ?

५. पुस्तकों से हमें किनकी जानकारी मिलती है ?

६. इस परिच्छेद के लिए एक उचित शीर्षक दीजिए ।

३. गौतम बुद्ध का जीवन परम-पवित्र और दिव्य था । उनके विचारों में अपूर्व उज्जवलता थी और वाणी में माधुर्य था । उनके उपदेशों में एक एसा आकर्षण था कि राजा और रंक सभी उनकी और खींच जाते । अशोक, कनिष्क, हर्ष आदि शक्तिशाली राजाओं ने उनके धर्म को ग्रहण किया । उन्होंने संसार को स्नेह और शांति का संदेश दिया। बुद्ध के उपदेशों का भारत और देशांतर पर अच्छा प्रभाव पड़ा । सर्वत्र प्राकृत का प्रचार हुआ और भारतीय कला और साहित्य का प्रसार हुआ ।

प्रश्न :

१. गौतमने कौन सा संदेश दिया ?

२. गौतम बुद्ध के जीवन की क्या विशेषता थी ?

३. बुद्ध के उपदेशों द्वारा किनका प्रचार और प्रसार हुआ ?

४. गौतम बुद्ध के उपदेशों का राजा और रंक पर क्या प्रभाव पड़ा ?

५. गौतम बुद्ध के विचार तथा वाणी के बारे में क्या कहा गया है ?

६. इस गद्यखंड को उचित शीर्षक दीजिए ।

४. खुशामद की कला का अपना विज्ञान है । इसके अपने सिद्धांत हैं । किसकी खुशामद करना, कब खुशामद करना, कैसे खुशामद करना, इसका ज्ञान तो होना ही चाहिए। महिलाओं से मतलब निकालना हो तो उनके रुप-सौंदर्य और वेशभूषा की प्रशंसा कर दीजिए । पुरुषों से काम निकालना हो तो उनकी बुद्धि, पराक्रम का बयान कर दीजिए । दाता और दानवीर कहने से कंजूस शेठ के दिल में भी उदारता उमड़ पड़ती है । चापलूसी करते समय सामनेवाले पक्ष की ही प्रशंसा करनी चाहिए । भूलकर भी अपनी बड़ाई नहीं करनी चाहिए । सामनेवाले के किसी शत्रु या द्वेषी की निंदा चापलूसी को और भी असरकारक बना देती है । आदर्श चापलूसी वही है, जिससे सामनेवाला फूलकर कुप्पा हो जाए और चापलूस की मुराद पूरी कर दे ।

प्रश्न :

१. महिलाओं से मतलब निकालने के लिए क्या करना चाहिए ?

२. कंजूस की उदार भावना जाग्रत करने के लिए क्या करना चाहिए ?

३. आदर्श चापलूसी कब सिद्ध होगी ?

४. चापलूसी विशेष असरकारक कैसे बनती है ?

५. पुरुषों से काम निकालने के लिए क्या करना चाहिए ?

६. इस परिच्छेद को उचित शीर्षक दीजिए ।

५. तुलसीदासजी ने उचित ही लिखा है - ''का वर्षा जब कृषि सुखाने, समय चूकि पुनि का पछताने'' । अवसर को खोकर पश्चाताप करना मूर्खता ही है । समय बलवान है और समय ही स्वर्ण है । जिन्होंने समय को पहचानकर इसका सदुपयोग किया है, वे विश्व में महान हो गए । बीता हुआ समय लौटकर नहीं आता । जीवन का हर क्षण मूल्यवान है । इसकी पहचान और सही उपयोग ही सफलता की कुंजी है । ज्ञान का अमित विस्तार है और जीवन के क्षण कुछ मात्र । इन दुर्लभ क्षणों को सही समय पर सही काम में लगाना बड़ी उपलब्धि है । वस्तुत: यह सोचना कि इस समय को नष्ट कर रहे हैं, एक बड़ी भूल है । सच तो यह है कि

समय ही हमें नष्ट कर रहा है । काल सबको खा जाता है, लेकिन उन महात्माओं को नहीं, जो इसका सदुपयोग करते हैं । गांधी, ईसा, न्यूटन, विवेकानंद आदि महान व्यक्तिओं के उदाहरण हमारे सामने हैं ।

प्रश्न :

१. समय को समझने के बारे में हम क्या भूल करते हैं ?

२. विश्व में कौन और क्यों महान हो सके ?

३. सफलता की कुंजी क्या है ?

४. जीवन में हमें किस मूर्खता से बचना चाहिए ?

५. काल किनको खा नहीं सकता ?

६. इस परिच्छेद को उचित शीर्षक दीजिए ।

६. जीवन एक अनमोल निधि है । यदि आप किसी कारणवश उसका समुचित लाभ अथवा आनंद नहीं उठा पाते, तो आपका पहला कर्तव्य है कि, आप अपनी वर्तमान परिस्थिति का अच्छी तरह विश्लेषण करें । आपकी समस्या क्या है, उसे भलीभांति समझें और अपनी मुसिबतों को दूर करने का उपाय सोचें । इसके विपरीत यदि आप परिस्थितियों को अपने उपर हावी होने देते हैं, और अपने वास्तविक एवं कल्पित कष्टों से मन को दु:खी बनाये रहते हैं । आप का कष्ट आर्थिक हो, परिवार के कई लोगों के भरण-पोषण के लिए आपको काफी वेतन न मिलता हो अथवा किसी गंभीर कष्ट से आप दबे हों, लेकिन घबराने से क्या इन सबका निराकरण हो जायेगा । अत: समस्या से डरिये मत, उसकी शिकायत मत कीजिए, बल्कि जूझने के लिए तैयार हो जाइए ।

प्रश्न :

१. जीवन को रसमय कैसे बना सकते है ?

२. मनुष्य अरुचिकर कार्य करने के लिए कब तैयार होता है ?

३. जीवन की समस्याओं का निराकरण किस प्रकार हो सकता है ?

४. इस परिच्छेद को उचित शीर्षक दीजिए ।

७. श्रमिक वर्ग के संपर्क में आने पर ऐसे अनेक व्यक्तियों से मेरा परिचय हुआ, जो सबसे निम्नतम सामाजिक स्तर के होते हुए भी उत्साह और जोश से भरपूर थे और अपने स्वीकृत ध्येय के लिए सम्पूर्ण निष्ठा से काम कर रहे थे । इससे मुझे विनम्रता का पाठ पढ़ने को मिला और यह पता चला कि छोटे-से-छोटे आदमी से भी हमें कुछ नसीहत मिल सकती है । इससे मुझे सांसारिक वस्तुओं की क्षणिकता का बोध हुआ और मुझमें अनासक्ति की भावना पनपी । मैं इसका भी ध्यान

रखता था कि मजदूरों का साथी होते हुए भी मिल-मालिकों के साथ मेरा व्यवहार आदरपूर्ण हो और चाहे उनके विचार मुझसे भिन्न हों, तो भी उनकी ईमानदारी पर मैं शक न करूँ । यही कारण है कि मेरे द्वारा संचालित बड़ी-से-बड़ी हडतालों में भी मालिकों को यह विश्वास रहता था कि वे मेरे साथ बातचीत करके समझौते पर पहुँच सकते हैं ।

प्रश्न :

१. श्रमिक वर्ग के संपर्क में आने पर लेखक का कैसे लोगों से परिचय हुआ ?

२. श्रमिकों से लेखक को कौन सा सबक और बोध प्राप्त हुआ ?

३. मजदूरों के साथी होते हुए भी लेखक और किस बात का ध्यान रखते थे ?

४. बडी से बडी हडतालों में भी मिल मालिकों को समझौते का विश्वास क्यों बना रहता था ?

५. समाज के निचले स्तर के लोगों के परिचय से लेखक को किस बात का पता चला ?

६. इस परिच्छेद को उचित शीर्षक दीजिए ।

८. मानव के व्यक्तित्व का निर्माण करनेवाले विभिन्न तत्वों में चरित्र का सबसे अधिक महत्व है । चरित्र एक ऐसी शक्ति है जो मानवजीवन को सफल बनाती है । चरित्र की शक्ति ही आत्मनिर्भरता उत्पन्न करती है । चरित्र मनुष्य के क्रिया-कलाण और आचरण के समूह का नाम है । चरित्ररूपी शक्ति के सामने पाशविक शक्ति भी नष्ट हो जाती है । चरित्र की शक्ति विद्या, बुद्धि और संपत्ति से भी महान होती है । इतिहास इस बात का साक्षी है कि कई चक्रवर्ती सम्राट धन, पद, वस्तु और विद्या के स्वामी थे, परंतु चरित्र के अभाव में अस्तित्वविहीन हो गए ।

प्रश्न :

१. चरित्र का क्या महत्व है ?

२. चरित्र का मानवजीवन पर क्या असर पडता है ?

३. पाशविक शक्ति किसके सामने नहीं टिक सकती ?

४. चरित्र किसे कहते हैं ?

५. इतिहास किस बात का साक्षी है ?

६. इस परिच्छेद को उचित शीर्षक दीजिए ।

९. मनुष्य तो मनुष्य ही है । पशु-पक्षी जहाँ जन्म लेते हैं, अपने उस देश को प्रेम करते हैं । जंगल में पैदा हुए किसी जानवर को आप पिंजडे में बंद कर सकते हैं, उसे लाख आराम पहुँचाने की कोशिश कर सकते हैं, पर वह सुखी नहीं हो सकता । उसे तो अपने जंगल का देश ही प्यारा लगता है । उसी तरह मुक्त आकाश में उडनेवाले पक्षी को पिंजडे में बंद करके सब तरह का सुख पहुँचाना

चाहें, तो भी वह कदापि सुखी नहीं हो सकता । उसका देश खुला आकाश, पेडों की शाखाएँ और घोंसला है । वहाँ वह धूप, वर्षा और ठंड के कष्ट सहकर भी सुखी रह सकता है ।

प्रश्न :

१. पशु पक्षी किस स्थान से प्रेम करते हैं ?

२. पिंजडे में बंद जंगली जानवर सुखी क्यों नहीं हो सकता ?

३. पक्षी का देश कौन सा है ?

४. पक्षी सुखी कैसे हो सकता है ?

५. इस परिच्छेद से हमें क्या सीख मिलती है ?

६. इस परिच्छेद को उचित शीर्षक दीजिए ।

१०. स्त्रियों की शिक्षा का स्वरूप पुरुषों की शिक्षा के स्वरूप से अलग रहना चाहिए । कताई, बुनाई, सिलाई, कटाई आदि की शिक्षा तो उन्हें दी ही जाए, किंतु इसी के साथ उन्हें कुटीर उद्योगों में भी निपुण बनाया जाना चाहिए, जिससे कि बुरा समय आने पर वे किसी की मोहताज न रहें । स्त्रियों को शिक्षित करने से हमारा घर स्वर्ग बन सकता है । नासमझ और फूहड औरतों से परिवार तबाह हो जाते हैं । जिस घर स्त्रियाँ सुशिक्षित और सुसंस्कृत होती हैं, वे घर जिंदा विश्वविद्यालय होते हैं । शिक्षा का अर्थ किताबी ज्ञान ही नहीं है, और न ही अक्षरज्ञान है, वह तो जीने की कला है ।

प्रश्न :

१. स्त्रियों को किस प्रकार की शिक्षा देनी चाहिए ?

२. हमारा घर स्वर्ग कब बन सकता है ?

३. जिंदा विश्वविद्यालय किसे कहा है ?

४. शिक्षा का अर्थ क्या है ?

५. बुरे समय में स्त्रियाँ स्वावलम्बी कैसे रह सकती हैं ?

६. इस परिच्छेद को उचित शीर्षक दीजिए ।

११. यदि सभी लोग अपने कर्तव्य और धर्म का पालन करें, तो सभी सुखी और समृद्ध बन सकते हैं, परंतु आज ऐसा नहीं हो रहा है । धर्म का स्थान गौणा तिगौण हो गया है । इसलिए सुख समृद्धि 'गूलर का फूल' हो गई है । यदि एक सुखी और संपन्न है तो पचास दु:खी और दरिद्र हैं । साधनों की कमी नहीं है, परंतु धर्म बुद्धि विकसित न होने के कारण उनका उपयोग नहीं हो रहा है । कुछ स्वार्थी और लोभी तो संसार में हंमेशा से रहे हैं और रहेंगे, परंतु आजकल ऐसी कुव्यवस्था है कि ऐसे लोगों को अपनी प्रवृत्ति के अनुसार काम करने का मौका मिल जाता

है । उनकी सफलता दूसरों को अनुगामी बना देती है । दूसरी ओर जो लोग सचमुच सदाचारी हैं उनके मार्ग में पद-पद पर अडचनें पडती हैं । सबमें सहयोग और समत्व की भावना हो तथा अपनी सहज योग्यताओं को विकास का अवसर मिले तो सुख-समृद्धि बढेगी ।

प्रश्न :

१. आजकल सभी लोग सुखी और समृद्ध क्यों नहीं हैं ?

२. समाज में कैसी विषमता है ? क्यों ?

३. कैसे लोग समृद्ध बन रहे हैं ?

४. सुख समृद्धि कब बढेगी ?

६. इस परिच्छेद को उचित शीर्षक दीजिए ।

१२. दु:ख के बिना सुख का अस्तित्व नहीं है और सुख के बिना दु:ख का । जब तक हमें एक का अनुभव नहीं होगा, तक तब हम दूसरे का अनुभव नहीं कर सकते । शीतलता का अनुभव करने के लिए उष्णता का अनुभव आवश्यक है । यह भी एक बात है कि काई सम्पूर्ण शीतलता ही नहीं ले सकता और न काई उष्णता । अत: आवश्यक ह: कि दोनों का समन्वय हो । न तो सम्पूर्ण दु:ख हो और न सम्पूर्ण सुख । ये दोनों मानव जीवन के ताने-बाने हैं । एक दूसरे के पुरक हैं । जीवन में सुख-दु:ख दोनों का मिश्रण होना चाहिए । यह मिश्रण मधुर हो । ऐसा न हो कि सुख अधिक हो दु:ख कम । यह भी न हो कि दु:ख ही अधिक हो और सुख कम । दोनों की मात्रा सम हो, विषम न हो ।

<u>प्रश्न :</u>

१. हम सुख का अनुभव कब कर सकते हैं ?

२. 'शीतलता' और 'उष्णता' शब्द किनके सूचक हैं ?

३. जीवन में सुख-दु:ख की मात्रा सम क्यों होनी चाहिए ?

४. सुख-दु:ख का परस्पर सम्बंध कैसा है ?

५. जीवन में सुख-दु:ख का क्या स्थान होना चाहिए ?

६. इस परिच्छेद के लिए एक उचित शीर्षक दीजिए ।

१३. हाथ की मजदूरी से ही सच्चे ऐश्वर्य क उन्नति होती है । जापान में मैंने कन्याओं और स्त्रियों को ऐसी कलावती देखा है कि वे रेशम के छोटे-छोटे टुकडों को अपनी दस्ताकारी की बदौलत बजारों की कीमत का बना देती हैं । नाना प्रकार के प्राकृतिक पदार्थों और दृश्यों को अपनी सुई से कपडे के ऊपर अंकित कर देती हैं । जापान निवासी कागज, लकडी और पत्थर की बडी अच्छी मूर्तियाँ बनाते हैं । एक जापानी तत्वज्ञानी का कथन है कि हमारी दस करोड अँगुलियाँ सारे काम करती हैं । उन अँगुलियों ही के बल से, संभव है, हम जगत को जीत लें । यदि भारत के तीस करोड नरनारियों की अँगुलियाँ मिलकर कारीगरी के काम करने लगें तो उनकी मजदूरी की बदौलत कुबेर का महल चरणों मे आप ही आप गिरे ।

प्रश्न :

१. सच्चे ऐश्वर्य की उन्नति किस से होती है ?

२. जापान की स्त्रियाँ किस कला में निपुण हैं ?

३. जापान निवासी क्या क्या बनाते हैं ?

४. जापानी तत्वज्ञानी के कथन का तात्पर्य क्या है ?
५. भारत को समृद्ध बनाने के लिए सदा क्या आवश्यक है ?
६. इस परिच्छेद के लिए एक उचित शीर्षक दीजिए ।

१४. गीता जीवन की कला सीखाती है । जब मैं देखता हूँ कि हमारा समाज आज हमारी संस्कृति के मौलिक सिद्धांतों कीअवहेलना करता है, तब मेरा हृदय फटता है । आप चाहे जहां जाएँ, परंतु संस्कृति के मौलिक सिद्धांतों को सदैव साथ रखें । संसार के सारे सुख क्षणभंगुर एवं अस्थायी होते हैं । वास्तविक सुख हमारी आत्मा में ही है । चरित्र नष्ट होने से मनुष्य का सब कुछ नष्ट हो जाता है । संसार के राज्य पर विजयी होने पर भी आत्मा कीहार सबसे बड़ी हार है । यही है हमारी संस्कृति का सार, जो अभ्यास द्वारा सुगम बनाकर कार्यरूप में परिणत किया जा सकता है।

प्रश्न :

१. लेखक का हृदय कब फटता है ?
२. लेखक हमसे किस बात का हंमेशा ध्यान रखने के लिए कहता है ?
३. संसार के सारे सुख कैसे होते हैं ?
४. मनुष्य का सब कुछ कब नष्ट हो जाता है ?
५. संस्कृति का सार क्या है ?
६. इस परिच्छेद के लिए एक उचित शीर्षक दीजिए ।

१५. हमारे देश में धर्मों-संप्रदायों के अनेक उपासना गृह - मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर और गुरुद्वारे हं । सभी शांति चाहते हैं, यह शांति का दर्शन कहीं होता नहीं । हर जगह कोई न कोई आंदोलन छिडा है । पत्थर, सिमेन्ट, गारे-चूने से बने इस भव्य,पवित्र स्थानों से मनुष्य की नैतिकता का कोई बल क्यों नहीं मिलता ? जरूरत इस बात की है कि इन धार्मिक स्थानों से नैतिकता और शांति का संदेश प्रसारित हो । इन स्थानों में परंपरागत पुजारियों की जगह गण्यमान्य विद्वान हों, जो हमारे मन को शांति दें और उसमें एक विशेष आस्था का संचार करें । हमें आज धार्मिक क्षेत्र में आवश्यकता है वैचारिक क्रांति की, सत्साहित्य की एवं चरित्र निर्माण की ।

प्रश्न :

१. हमारे देश में धर्म और संप्रदायों की क्या स्थिति है ?
२. हमारे देश में कौन-कौन से धार्मिक स्थान हैं ?
३. आज धार्मिक स्थानों से हमारी क्या अपेक्षाएँ हैं ?
४. आज धार्मिक क्षेत्रे में हमें किन बातों की आवश्यकता है ?
५. हर जगह आंदोलन क्यों छिडा हुआ है ?
६. इस परिच्छेद के लिए एक उचित शीर्षक दीजिए ।

(क) निम्नलिखित परिच्छेद को पढकर मातृभाषा में अनुवाद कीजिए ।

१. जब १९ जून का सूर्य उदित हुआ तो विद्रोही सेना के अन्य नेता और सिपाही तितर-बितर हो चुके थे । केवल एक लक्ष्मीबाई और उनके मुट्ठीभर साथी विजय मद से मस्त सम्पूर्ण अंग्रेजी सेना से संग्राम करने के लिए मोर्चे पर रह गए थे । यह देखकर महारानी ने सारी शक्ति एकत्र करके अन्तिम बार युद्ध करने का निश्चय किया। उनका संकल्प था कि आज या तो अंग्रेजी सेना को परास्त कर

दूँगी या उनकी पंक्तियों को चीरकर बाहार निकल जाउँगी । उस अन्तिम युद्ध प्रयाण में उनके चार भवत अनुयायी भी थे । दो सखियाँ थी; जिनके नाम सुन्दर और मुन्दर थे और दो सेवक थे, जिनके नाम रामचंद्रराव और रघुनाथसिंह थे ।

२. अमिता अपनी बाँहें फैलाकर चारों ओर पडे इस धन की ओर संकेत कर अशोक से बोली ''बोलो, तुम्हें क्या चाहिए ? फल चाहिए, मिष्टान्न चाहिए या खिलौने चाहिए ? जो चाहिए लो । यहाँ सब कुछ है । हम तुम्हें सब कुछ देंगे । तुम किसी से छीनो मत । किसी को डराअे मत । तुम्हें क्या चाहिए, बोलो ।''

३. तुमने मेरा कोई अपराध नहीं किया मानिकचंद । तुम मुझसे क्षमा बेकार में माँग रहे हो । कोई बहुत बडा पाप किया होगा मैंने कभी, उसी का दंड मुझे मिला । वह दंड मैंने भुगत लिया है और आज मेरे मन में कोई ग्लानि नहीं, कोई सन्ताप नहीं । मेरे लडके की डॉक्टरी अच्छी चलती है और वह ईमानदार तथा कर्तव्य-परायण आदमी है । मेरा जीवन मेरी पत्नी की, मेरे पुत्र की,मेरे पौत्रों की ममता है । मेरा सुख-दु:ख उनका सुख-दु:ख है ।

४. आज वह बडी प्रसन्न थी । दो घण्टे में ही कूडे के ढेर से इतने काँच के टुकडे उसने इकट्ठे कर लिये थे जितने वह रात-दित तक नहीं कर पाती थी । वह प्रतिदिन ईश्वर के आगे हाथ जोडती थी कि लोगों की काँच की बातलें अधिक से अधिक टूटें, तथा उन्हें बीन-बीनकर वह रोटी कमा सके । भागी-भागी वह दुकानदार के पास गई टुकडे बेचने । उसे पाँच रुपये मिले । पल्लू के किनारे नोट बाँधकर वह फिर काँच के टुकडे बीनने में व्यस्त हो गई ।

५. दढियल झल्लाकर बैलों को जबरदस्ती पकड ले जाने के लिए बढा । उसी वक्त मोतीने सींग चलाया । दढियल पीछे हटा । मोतीने पीछा किया । दढियल भागा । मोती पीछे दौडा । गाँव के बाहर निकल जाने पर वह रुका पर खडा दढियल का रास्ता देख रहा था । पत्थर फेंक रहा था । मोती विजयी शूर की भाँति उसका रास्ता रोके खडा था । गाँव के लोग यह तमाशा देखते थे और हँसते थे । जब दढियल हारकर चला गया, तो मोती अकडता हुआ लौटा ।

६. पालने पर वह पशु न रहकर ऐसा स्नेही संगी बन जाता है, जो मनुष्य के एकांत शून्य को तो भर देता है, परंतु खीझ उत्पन्न करनेवाली जिज्ञासा से उसे बोझिल नहीं बनाता । यदि मनुष्य दूसरे मनुष्य से केवल नेत्रों से बात कर सकता है तो बहुत से विवाद समाप्त हो जाते । परंतु प्रकृति को यह अभीष्ट नहीं रहा होगा । संभवत: इसीसे मनुष्य वाणी द्वारा परस्पर किये गये आघातों और सार्थक शब्द-भार से पीडित अपने प्राणों पर इन भाषाहीन जीवों की स्नेह तरल दृष्टि का चन्दन लेप लगाकर स्वस्थ और आश्वस्त होना चाहता है । पशु मनुष्य के निश्छल स्नेह से परिचित रहते हैं । उसकी ऊँची-नीची सामाजिक स्थितियों से नहीं । यह सत्य मुझे सोना से अनायास प्राप्त हो गया ।

७. आज ठीक चौदह माह से मैं जेल में हूँ । इन में से ग्यारह मास कटे, सुदूर ब्रह्मदेश में । कभी-कभी लगता है कि लम्बे चौदह महीने देखते-देखते बीत गये, किन्तु दूसरे ही क्षण लगता है कि जाने कितने युगों से यहाँ पडा हूँ । यह जैसे मेरा घर मकान हो; यहाँ से बाहर की बात तो स्वप्न जैसी, पहेली जैसी लगती है । जैसे

इस जगत में एकमात्र सत्य है लोहे की सलाखें और पत्थर की दीवारें । वास्तव में यह एक नयी विचित्र दुनिया है । कभी कभी मुझे ऐसा लगता है कि जिसने जेलखाना नहीं देखा उसने दुनिया में कुछ नहीं देखा । उसे देखे बिना दुनिया के बहुत सारे सत्य प्रकट नहीं होते ।

८. इस आदमी को लगा कि उसके हुक्म की अवहेलना हो रही है । वह अपने कमरे में टहलता हुआ, जो कहना सुनना भटियारे और बच्चे की माँ के बीच हुआ, सब सुन रहा था । उसके मन को आराम नहीं मिल रहा था । उसको बुरा मालूम हो रहा था कि क्यों वह इस गंदी परिस्थिति में पड गया । क्यों उसे जिद करनी चाहिए कि बच्चे को लेकर वह औरत ठीक इसी वक्त कोठरी से बाहर निकल जाए । लेकिन जब भटियारे ने उसके सामने आकर यह कहा कि उसे दया करनी चाहिए, तब मानो अपने विरुद्ध होकर उसने जोर से कहा, ''तुम से इतना नहीं होता और तुम अपने को मर्द समझते हो ? चलो हटो ।''

९. उनकी एकता और अनुशासन यदि मानवजाति में होती तो विभिन्न देशों में भारी भगदड न मची होती । तकनीकी लिहाज से जापान, युरोप, रूस, कनाडा जैसे उन्नत राष्ट्र भी इस हिमपात का मुकाबला नहीं कर सके । अनेक शहरों में पाँच से छः मीटर तक बर्फ गिरी थी । इतने भीषण हिमपातने चारों तरफ तबाही भचा दी । सिर्फ कुछ ही लोग इस तबाही से अपने आप को बचा सके थे । ये सभी लोग उन शेल्टरों में थे जो अणु युद्ध से बचने के लिए बनाए गए थे । मध्य पूर्व एशिया, मेक्सिको जैसे देशों में ठंड का आघात कम था । लेकिन चूंकि उनके पास बचाव का कोई जरिया नहीं था, इसलिए वहाँ भी जान माल की भयंकर हानि हुई थी ।

१०. धुमक्कडी वही कर सकता है जो निश्चिंत है । धुमक्कडी के लिए चिंताहीन होना आवश्यक है और चिंताहीन होने के लिए धुमक्कडी भी आवश्यक है । दोनों का अन्योन्याश्रय होना दूषण नहीं, भूषण है । धुमक्कडी से बढकर सुख कहाँ मिल सकता है ? आखिर चिंताहीनता तो सुख का सबसे स्पष्ट रूप है । धुमक्कडों में कष्ट भी होते है, लेकिन उन्हें उसी तरह समझिए जैसे भोजन में मिर्च । मिर्च में यदि कडवाहट न हो, तो क्या कोई मिर्च प्रेमी उसे हाथ भी लगाएगा ? वस्तुतः धुमक्कडी में कभी कभी होनेवाले कडवे अनुभव उसके रस को बढा देते है, और उसी तरह जैसे काली पृष्ठभूमि में चित्र अधिक खिल उठता है ।

११. मुझे इसमें खुशी नहीं मिली । पर जब लोग तारीफ करते थे, तब जरूर खुशी होती थी । और, आपस में जो एक होड का सा भाव रहता था कि देखें कौन ज्यादा दुश्मनों को मारता है, उस होड में जीतने की खुशी को भी खुशी कहा जा सकता है । असली मारने में तो दरअसल किसी तरह का स्वाद है नहीं । और दुश्मन ? मुझे नहीं मालूम, ये मेरे दुश्मन क्यों थे ? जिन्हें मैंने मारा, मेरा उन्होंने क्या बिगाडा था ? दुश्मन तो दुश्मन, मैं उन्हें जानता भी नहीं था । अब भी यह सोचने की बात मालूम होती है कि फिर वह क्यों तलवार खोलकर मेरी गर्दन काटने सीधा मेरी तरफ बढा चला आता था और क्यों उसे मैंने अपनी तलवार की धार उतार दिया, जबकि हममें कोई तकरार न थी ।

१२. मनुष्य अपनी हीनता से दबता है । वह दूसरों की निंदा करके ऐसा अनुभव करता है कि वे सब निकृष्ट हैं और वह उनसे अच्छा है । उसके अहं की इससे तृष्टि होती है। बडी लकीर को कुछ मिटाकर छोटी लकीर बडी बनती है । ज्यों ज्यों कर्म क्षीत होता जाता है, सों सों निंदा की प्रवृत्ति बढती जाती है । कठिन कर्म ही ईर्ष्या, द्वेष और इनसे उत्पन्न निंदा को मारता है । इंद्र बडा ईर्ष्यालु माना जाता है, क्योंकि वह निठल्ला है । स्वर्ग में देवताओं को बिना उगाया अन्न और बिन बोये फल मिलते हैं ।

१३. एक क्षण तो कोइ कुछ समझ न पाया । पर दूसरे ही क्षण जो अट्टहास्य उठा, उसकी गूँज आज सत्तर वर्ष बाद भी सुन सकता हूँ और अपने उस रूप को, अपनी ही आँखों से देख सकता हूँ । न जाने कब और कैसे मेरे शिशु मन ने टोपी को इज्जत का पर्याय मान लिया था । शायद नानी ने कोई कहानी सुनाई होगी । मामाजी के वह मित्र मेरे युवा हो जाने पर भी उस घटना की याद दिलाकर खूब हँसा करते थे । तुमतो भाई बहुत इज्जतदार आदमी हो । अब हम तुम्हारी इज्जत कभी नहीं उतारेंगे ।

१४. शास्त्रों में जिज्ञासा ऐसी चीज के लिए होनी बतलाई गई है, जो कि श्रेष्ठ हो तथा व्यक्ति और समाज के लिए परम हितकारी हो । व्यासने अपने शास्त्र में ब्रह्म को सर्वश्रेष्ठ मानकर उसे जिज्ञासा का विषय बनाया । व्यास शिष्य जैमिनीने धर्म को श्रेष्ठ माना । पुराने ऋषियों में मतभेद रखना हमारे लिए पाप की वस्तु नहीं है, आखिर छह शास्त्रों के रचयिता छह आस्तिक ऋषियों में भी आघों ने ब्रह्म को धता बता दिया है । मेरी समझ में दुनिया की सर्वश्रेष्ठ वस्तु है धुमक्कडी । धुमक्कड से बढकर व्यक्ति और समाज का कोई हितकारी नहीं हो सकता ।

१५. पक्षी जगत में ही नहीं, पशु जगत में भी मनुषय की ध्वंसलीला ऐसी ही निष्ठुर है । पशु जगत में हिरन जैसा निरीह और सुन्दर दूसरा पशु नहीं है - उसकी आँखें तो मानो करूणा की चित्रलिपि हैं । परन्तु इसका भी गतिमय, सजीव सौंदर्य मनुष्य का मनोरंजन करने में असमर्थ है । मानव को, जो जीवन का श्रेष्ठतम रूप है । जीवन के अन्य रूपों के प्रति इतनी वितृष्णा और विरक्ति और मृत्यु के प्रति इतना मोह और आकर्षण क्यों ?